www.tamsasanket.com
वर्षः 05 || अंक 297 || लखनऊ
शनिवार
31 जनवरी 2026 || पृष्ठः 04 || मूल्यः ₹ 2
आज़ादी का अमृत महोत्सव
समूह संपादक- डॉ. ओ.पी. मिश्रा
दैनिक
तमसा संकेत
https://epaper.tamsasanket.com
लखनऊ व अम्बेडकर नगर से एक साथ प्रकाशित
डॉ. लोहिया की जन्म भूमि से सर्वप्रथम प्रकाशित समाचार पत्र

मौसम
सूर्योदयः 06:52
सूर्यास्तः 05:47
अधिकतमः 21°00
न्यूनतमः 11°00

पेज 03

विशेष समाचार | क्या हम डिजिटल दुनिया की ... >> पेज 02 | विमान की इमरजेंसी लैंडिंग, 275 ... >> पेज 04 | विवेक ओबेरॉय की कॉन्फ्रेंस के बाद ...

एनसीपी के दोनों गुटों के विलय और विभागों के बंटवारे को लेकर चर्चा तेज

अजित पवार की पत्नी को डिप्टी सीएम बनाने की मांग

चर्चा

तमसा संकेत, एजेंसी

मुंबई/पुणे। अजित पवार की पत्नी सुनेत्रा पवार महाराष्ट्र की डिप्टी सीएम बन सकती हैं। पार्टी के नेता छगन भुजबल ने शुक्रवार को बताया, 'पार्टी के विधायक दल की बैठक कल होगी। सुनेत्रा के नाम पर चर्चा हो रही है। अगर कल कोई फैसला होता है, तो शपथ ग्रहण समारोह कल ही होगा।' अजित की प्लेन क्रैश में मौत के बाद उप मुख्यमंत्री पद खाली हो गया है। यह पद पत्नी को दिए जाने, NCP के दोनों गुट के विलय और विभागों के बंटवारे को लेकर अटकलें जारी हैं। इन्हीं मांगों को लेकर आज NCP के नेता CM देवेंद्र फडणवीस से मिलने उनके घर वर्षा बंगले पहुंचे। इसमें प्रफुल्ल पटेल, छगन भुजबल, सुनील तटकरे शामिल हुए। मीटिंग आधे घंटे तक चली। महाराष्ट्र सरकार में अजित के पास वित्त, आबकारी और खेल विभाग के साथ-साथ डिप्टी चीफ मिनिस्टर का पद भी था। NCP नेताओं में इस बात पर चर्चा चल रही है कि ये विभाग और पार्टी की नेशनल लीडरशिप किसे दी जाए। यह दावा भी किया जा रहा है कि अजित पवार NCP के दोनों गुट के जिस मर्जर पर बातचीत कर रहे थे, उस पर आखिरी फैसला शरद पवार लेंगे। अजित की 28 जनवरी को बारामती में एक प्लेन क्रैश में मौत हो गई थी। वे जिला परिषद चुनाव के लिए रैली को संबोधित करने जा रहे थे। नेशनलिस्ट कांग्रेस पार्टी (NCP) के नेता छगन भुजबल ने कहा, 'हम मुख्यमंत्री से मिलने गए थे, जैसा कि आप जानते हैं, जब किसी की मौत हो जाती है, तो कभी-कभी शोक तीन दिन तक चलता है, कभी दस दिन तक, इस दौरान लोग बाहर नहीं निकलते। मुझे ऐसे सभी रीति-रिवाजों की पूरी जानकारी नहीं है, लेकिन इन मामलों पर विचार किया जा रहा है।

एनसीपी विलय को लेकर 3 लोगों के दावे

» अजित के करीबी किरण गुजर ने न्यूज एजेंसी PTI को बताया कि वे दोनों गुटों को मिलाने के लिए 100% उत्सुक थे। उन्होंने पांच दिन पहले कहा था कि प्रक्रिया पूरी हो गई है और अगले कुछ दिनों में विलय होने वाला है। गुजर ने कहा कि अजीत के पास विलय और एकजुट NCP के भविष्य के लिए एक रोडमैप तैयार था।

» एनसीपी के सीनियर नेता जयंत पाटिल ने भी कहा है कि विलय को लेकर अजित दादा और उनके बीच कई बैठकें हो चुकी थी। अजित इसे लेकर सकारात्मक थे। जिला परिषद चुनाव के बाद इस पर अंतिम निर्णय होना था। अजित दादा ने कहा था पहले स्थानीय निकाय के चुनाव गठबंधन करके लड़ा जाए, विलय का फैसला चुनाव के बाद लेंगे।

» एनसीपी शरद गुट के नेता एकनाथ खड़से ने न्यूज एजेंसी ANI से कहा है कि एनसीपी के दोनों गुट एक साथ आएंगे।

महाराष्ट्र की राजनीति के 2 बड़े अपडेट्स

- अजित की पत्नी सुनेत्रा पवार ने नरेश अरोड़ा को राजनीतिक सलाह के लिए बारामती बुलाया है। नरेश, अजित पवार के चुनावी रणनीतिकार हैं। उनकी संस्था 'डिजाइनबॉक्स' एनसीपी के लिए काम करती है।
- 12 जिला परिषद और 125 पंचायत समिति के लिए मतदान अब 5 फरवरी के बजाय 7 फरवरी को होगा। रिजल्ट 9 फरवरी को घोषित किए जाएंगे।

सूत्रों का कहना है कि विलय से कैबिनेट के गणित में मौलिक बदलाव आएगा। अगर विलय होता है, तो एनसीपी (एसपी) के नेता राज्य के शासन और पार्टी संगठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

प्रफुल्ल पटेल बोले- सीएम जल्दी फैसला लें

CM देवेंद्र फडणवीस से मुलाकात के बाद एनसीपी के नेता प्रफुल्ल पटेल ने मीडिया से कहा, 'हमने मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस को साफतौर पर बता दिया है कि जनभावना को ध्यान में रखते हुए जल्द से जल्द फैसला लेना जरूरी है।' प्रफुल्ल ने कहा, 'हमारी मांग है कि अजित के पोर्टफोलियो और NCP से जुड़े फैसलों को लेकर कोई अनिश्चितता नहीं होनी चाहिए। राज्य की मौजूदा स्थिति कार्यकर्ताओं के असंतोष और जनता की भावनाओं को देखते हुए बिना देरी ठोस निर्णय लेना जरूरी है।'

एनसीपी का विलय हुआ तो क्या होगा...

NCP (SP) के सूत्रों ने न्यूज एजेंसी PTI को बताया कि बुधवार को हुए प्लेन क्रैश से पहले NCP के दोनों पक्ष बातचीत के एडवांस्ड स्टेज पर पहुंच गए थे। जिला परिषद और पंचायत समिति चुनावों के खत्म होने के तुरंत बाद विलय की घोषणा किए जाने का प्लान था। अजित की रणनीति यह थी कि स्थानीय निकाय चुनावों के दौरान माहौल का जायजा लिया जाए और पूरी तरह से विलय की घोषणा करने से पहले दोनों पार्टियों के वोट बैंक को मजबूत किया जाए। विलय के बाद NCP के पास 9 लोकसभा सांसदों और 51 विधायकों का एक मजबूत संयोजन होगा, जो संभावित रूप से सत्तारूढ़ महायुति गठबंधन या विपक्षी महाविकास अघाड़ी (MVA) के भीतर संतुलन बदल सकता है।

इस समय यह चर्चा करना कि उपमुख्यमंत्री कौन बनेगा, जल्दबाजी और गलत है। उनकी दिली इच्छा थी कि दोनों पार्टियां एकसाथ आ जाएं। मैंने भी इस बारे में उनसे बात की थी। मेरे विचार से, उनकी आखिरी इच्छा पूरी होनी चाहिए।

अनिल देशमुख नेता, एनसीपी शरद गुट

अजित की जगह सीएम फडणवीस पेश कर सकते हैं बजट

अजित के निधन के बाद अब लगभग यह तय है कि महाराष्ट्र का वित्त विभाग फिलहाल महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के पास रहेगा और मार्च में CM ही महाराष्ट्र का बजट पेश करेंगे। गृह और वित्त दोनों महत्वपूर्ण विभाग थे।

पूर्व उपराष्ट्रपति अंसारी ने महमूद गजनवी को भारतीय लुटेरा बताया

नई दिल्ली। पूर्व उपराष्ट्रपति एम हामिद अंसारी के महमूद गजनी को 'भारतीय लुटेरा' बताने पर भाजपा ने शुक्रवार को आरोप लगाया कि विदेशी आक्रमणकारियों और लुटेरों के प्रति अंसारी का लगाव उनकी "बीमार मानसिकता" को दिखाता है। हामिद अंसारी ने एक पत्रकार को दिए इंटरव्यू में कहा, 'इतिहास की पुस्तकों में जिन्हें विदेशी आक्रमणकारी और लुटेरे लिखा गया, उनमें महमूद गजनवी भी शामिल हैं। वह वास्तव में 'भारतीय लुटेरा' था। अंसारी ने कहा कि राजनीतिक रूप से यह कहना सुविधाजनक है कि उन्होंने यह नष्ट किया, वह नष्ट किया, लेकिन वे सब भारतीय थे।' ये वीडियो 30 जनवरी 2026 को वायरल हुआ। हामिद अंसारी दो बार भारत के उपराष्ट्रपति रहे। वे 2007-12 और 2012-17 में उपराष्ट्रपति के पद पर रहे थे। इतिहासकारों के अनुसार महमूद महमूद गजनवी, गजनी (वर्तमान अफगानिस्तान) का शासक था।

महात्मा गांधी की 78वीं पुण्यतिथि, मोदी ने श्रद्धांजलि दी

राहुल गांधी बोले- राष्ट्रपिता का मंत्र था सत्ता से बड़ी सत्य की ताकत

संकल्प

तमसा संकेत, एजेंसी

नई दिल्ली। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की आज 78वीं पुण्यतिथि है। इस मौके पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, पीएम मोदी समेत कई बड़े नेताओं ने राजघाट जाकर महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि दी। पीएम मोदी ने एक्स पर लिखा - राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को उनकी पुण्यतिथि पर मेरा शत-शत नमन। पूज्य बापू का हमेशा स्वदेशी पर बल रहा, जो विकसित और आत्मनिर्भर भारत के हमारे संकल्प का भी आधारस्तंभ है। उनका व्यक्तित्व और कृतित्व देशवासियों को कर्तव्य पथ पर चलने के लिए सदैव प्रेरित करता रहेगा। लोकसभा में नेता विपक्ष कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने X पोस्ट में लिखा- राष्ट्रपिता ने हमें मूलमंत्र दिया कि सत्ता की ताकत से बड़ी सत्य की शक्ति होती है।

- राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने राजघाट पर महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि दी।
- राहुल गांधी ने महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर तीस जनवरी मार्ग पर पुष्पांजलि अर्पित की।

राजस्थान- साध्वी की संदिग्ध परिस्थिति में मौत के बाद समाधि

पिता बोले- गलत इंजेक्शन से गई जान, भक्तों ने पिता पर ही सवाल उठाए

तमसा संकेत, एजेंसी

बाड़मेर। राजस्थान की कथावाचक साध्वी प्रेम बाईसा (23) की विवादित मौत के बाद आज उन्हें समाधि दी गई। बाईसा को बुधवार को जोधपुर के एक प्राइवेट हॉस्पिटल में एडमिट कराया गया था। कुछ मिनटों बाद ही उन्होंने दम तोड़ दिया था। प्रेम बाईसा के पिता वीरमनाथ का दावा है कि उन्हें केवल मामूली जुकाम था। जोधपुर के ही आश्रम में उन्हें एक इंजेक्शन लगाया गया था, इसके बाद उनकी तबीयत बिगड़ गई थी। हॉस्पिटल में मौत के बाद उनका एक कथित सुसाइड नोट सामने आया था। इसके बाद साध्वी से जुड़ा पुराना ब्लैकमेलिंग केस फिर चर्चा में आ गया है। वहीं, कई भक्तों ने उनके पिता की भूमिका पर भी सवाल उठाए हैं। 13 जुलाई 2025 को सोशल मीडिया पर साध्वी का एक वीडियो वायरल हुआ था। इस वीडियो में वे एक व्यक्ति से गले मिलते नजर आ रही थीं। इसे अश्लील बताकर प्रचारित किया गया था। साध्वी ने 16 जुलाई को बोरानाडा थाने में इस मामले में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। उन्होंने अपनी एफआईआर में बताया था कि वीडियो में दिखने वाला व्यक्ति उनके पिता वीरमनाथ (गुरुजी) हैं। यह वीडियो 2021 का था, जब वे अवसाद में थीं और पिता ने उन्हें ढांढस बंधाया था। मामले की जांच के बाद पुलिस ने 4 लोगों को गिरफ्तार किया था। इनमें साउंड सिस्टम लगाने का काम करने वाला जोगेंद्र उर्फ जोगाराम (29), पूर्व ड्राइवर रमेश, कृष्णा (जोगेंद्र की पत्नी) और दो अन्य लोग शामिल थे। साध्वी ने आरोप लगाया था कि जोगेंद्र ने घर में लगे सीसीटीवी कैमरे से इसे निकाला था। इसके बाद उसने और उसके साथियों ने वीडियो वायरल करने की धमकी देकर 20 लाख रुपए की मांग की।

>> (शेष पेज 04 पर)

फास्ट न्यूज

स्कूलों में लड़कियों को फ्री सैनेटरी पैड मिले :सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को देश के सभी प्राइवेट और सरकारी स्कूलों को निर्देश दिया कि हर स्कूल में लड़कियों को फ्री में सैनेटरी पैड बांटना अनिवार्य होगा। लड़के और लड़कियों के लिए अलग-अलग वॉशरूम बनाने होंगे। जो स्कूल ऐसा नहीं कर पाएंगे, उनकी मान्यता रद्द की जाएगी इसके साथ ही कोर्ट ने सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को निर्देश दिया है।

ट्रक की टक्कर से कार के परखच्चे उड़े...चार की मौत

ग्वालियर। ग्वालियर में शुक्रवार सुबह घने कोहरे के बीच सड़क हादसा हो गया। भिंड रोड हाईवे पर बंटू ढाबा के सामने तेज रफ्तार ट्रक ने वैगनआर कार को जोरदार टक्कर मार दी। हादसा इतना भीषण था कि कार सवार चार लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। मृतकों में दो महिलाएं और दो पुरुष शामिल हैं। सभी भिंड जिले के हैं। सुबह करीब 8 बजे जैसे ही इनकी कार बंटू ढाबा के पास पहुंची, पीछे से आ रहे तेज रफ्तार ट्रक ने कार को रौंद दिया। पुलिस के मुताबिक, मृतकों की पहचान सौरभ शर्मा निवासी मेहगांव (भिंड), ज्योति यादव (भिंड), भूरे प्रजापति (गोरमी) भिंड और उमा राठौर पत्नी पति राम राठौर, निवासी मोरोली भिंड के रूप में हुई है।

8 साल की बच्ची की ई-रिक्शे से दबकर मौत

मुजफ्फरनगर। मुजफ्फरनगर में सड़क पार कर रही बच्ची पर ई-रिक्शा पलट गया। नीचे दबकर बच्ची की मौत हो गई। हादसा देखकर आसपास के लोग दौड़ पड़े। ई-रिक्शा को सीधा किया। गंभीर हालत में बच्ची को लेकर अस्पताल गए। यहां डॉक्टर ने बच्ची को मृत घोषित कर दिया। इसके बाद परिजन बिना पुलिस को जानकारी दिए शव घर लेकर आ गए। बच्ची के शव को सुपुर्द-खाक कर दिया गया।

मंत्री स्वतंत्र देव का बीजेपी विधायक ने रास्ता रोका

काफिले के आगे 50 गाड़ियां लगाईं, धक्का-मुक्की-बवाल, अखिलेश बोले- ये हारने वाले हैं

- भाजपा विधायक के समर्थकों और सीओ सिटी अरुण कुमार सिंह के बीच झड़प हुई।
- मंत्री और विधायक एक गाड़ी में बैठे। इस दौरान दोनों के बीच बहस होती रही।

तमसा संकेत, एजेंसी

महोबा। यूपी के महोबा जिले में भाजपा विधायक बृजभूषण राजपूत और कैबिनेट मंत्री स्वतंत्र देव सिंह आपस में भिड़ गए। मंत्री एक कार्यक्रम से लौट रहे थे। शुक्रवार दोपहर करीब साढ़े तीन बजे विधायक ने 100 ग्राम प्रधानों के साथ मिलकर उनका रास्ता रोक लिया। 30 कार और 20 बाइकें मंत्री के काफिले के सामने खड़ी कर दी। चरखारी विधायक ने मंत्री से अपनी विधानसभा के 100 गांवों में पानी न पहुंचने और पाइपलाइन के लिए खोदी गई सड़कों की मरम्मत न होने पर नाराजगी जताई।

>> (शेष पेज 04 पर)

मंत्री-विधायक के टकराव पर अखिलेश यादव ने एक्स पर लिखा- हमने तो पहले ही कहा था कि भाजपा के 'डबल इंजन' ही नहीं डिब्बे भी आपस में टकरा रहे हैं। पैसे कमाने और जमीन कब्जाने में लगे भाजपा के मंत्री हों या विधायक, इनमें से कोई भी जनता या विकास का काम नहीं कर रहे हैं। इसीलिए जनता के गुस्से से बचने के लिए वो एक-दूसरे पर दोषारोपण कर रहे हैं।

कांग्रेस ने राज्य को बंदूक-गोली, संघर्ष और युवाओं की मौत के अलावा क्या दिया

असम में 64-लाख घुसपैठिए, 7 जिलों में इनका बहुमत : शाह

तमसा संकेत, एजेंसी

गुवाहाटी। गृह मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को असम में बदलती डेमोग्राफी पर कांग्रेस को जिम्मेदार ठहराया। गृह मंत्री ने कहा, मैं राहुल गांधी से पूछना चाहता हूं कि उनकी पार्टी ने असम को बंदूकें, गोलियों, संघर्ष और युवाओं की मौत के अलावा क्या दिया है। शाह ने कहा कि कांग्रेस शासन के दौरान असम में घुसपैठियों की आबादी शून्य से बढ़कर 64 लाख हो गई और सात जिलों में घुसपैठिए बहुमत में हो गए। मोदी सरकार राज्य में डेमोग्राफिक ट्रेंड को उलटने का काम कर रही है। शाह ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर नॉर्थईस्ट का अपमान करने का भी आरोप लगाया। असम के डिब्रूगढ़ में खानिकर परेड ग्राउंड में एक जनसभा को संबोधित करते हुए शाह ने कहा कि गणतंत्र दिवस पर विदेशियों सहित सभी गणमान्य व्यक्तियों ने सम्मान के प्रतीक के रूप में स्कार्फ पहना था, लेकिन राहुल ने इनकार कर दिया था। शाह ने आगे कहा कि राहुल गांधी जो चाहें कर सकते हैं, लेकिन जब तक बीजेपी सत्ता में है। हमारी पार्टी नॉर्थ ईस्ट की संस्कृति का अपमान बर्दाश्त नहीं करेगी। केंद्रीय गृह मंत्री ने असम में घुसपैठियों को बसने से रोकने में मिसिंग समुदाय की भूमिका पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा, घुसपैठ को रोकना मिसिंग समुदाय की जिम्मेदारी है। आपको बंदूक उठाने की जरूरत नहीं है।

शाह ने कहा कि बीजेपी ने पिछले चुनावों में वादा किया था कि उसकी सरकार असम को बाढ़ मुक्त बनाएगी। इस दिशा में कदम 2026 के चुनावों से पहले ही उठाए जा चुके हैं। उन्होंने असम के मतदाताओं से अपील की कि "विकास, शांति, सुरक्षा, औद्योगिक और कृषि प्रगति सुनिश्चित करने और असम को घुसपैठ और बाढ़ से मुक्त बनाने के लिए लगातार तीसरी बार बीजेपी को चुनें।

>> (शेष पेज 04 पर)

हमलाः गाय को गोमाता घोषित करें, वरना मानेंगे सिर्फ दिखावे के लिए गेरुआ पहना

योगी 40 दिन में हिंदू होने का प्रमाण दें : अविमुक्तेश्वरानंद

तमसा संकेत, एजेंसी

वाराणसी। प्रयागराज माघ मेला छोड़ने के बाद शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद सरकार पर तीखे हमले कर रहे हैं। उन्होंने शुक्रवार को वाराणसी में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर कहा- मुझसे शंकराचार्य होने का प्रमाण पत्र मांगा गया। वह मैंने दे दिया। मेरे प्रमाण सच्चे थे, इसलिए उन्हें मानना पड़ा। अब प्रमाण मांगने का समय पीछे छूट गया। अब मुख्यमंत्री को अपने हिंदू होने का प्रमाण देना चाहिए। यूपी कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय और कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव अविनाश पांडेय ने शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद से मुलाकात की। अजय राय ने कहा- शंकराचार्य का पद दुनिया में सर्वश्रेष्ठ है।

शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद ने कहा- अभी तक देश में यह बताया जाता था कि राजनीतिक पार्टियों में भेद है। वॉट्सऐप पर भी यह कहा जाता था कि 1966 में जो सरकार थी, वह गो-हत्या बंद नहीं करना चाहती थी, इसलिए उसने गो-भक्तों पर गोली चलवाई थी।

यूपी कांग्रेस अध्यक्ष बोले- सरकार ने शंकराचार्य का नहीं, बल्कि परंपरा का अपमान किया

यूपी कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय और कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव अविनाश पांडेय ने शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद से मुलाकात की। अजय राय ने कहा- शंकराचार्य का पद दुनिया में सर्वश्रेष्ठ है। इस सरकार ने उनका नहीं, बल्कि युगों की परंपरा का अपमान किया है। संत, सनातन और भारतीय संस्कृति के सम्मान और मर्यादा की रक्षा के लिए कांग्रेस पार्टी पूरी मजबूती और निष्ठा के साथ खड़ी है। केवल वे ही नहीं, बल्कि पूरा कांग्रेस नेतृत्व माघ मेले के दौरान हुई घटनाओं से आहत है।

शिष्य का दावा- शंकराचार्य से माफी मांगेगा प्रयागराज प्रशासन

शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती से प्रयागराज प्रशासन माफी मांगने को तैयार हो गया है। शंकराचार्य के मीडिया प्रभारी योगीराज सरकार ने यह दावा किया है। उन्होंने बताया, 'शंकराचार्य अचानक माघ मेला छोड़कर वाराणसी चले जाएंगे।

ओडिशा डीएसपी को लाल बालों पर पुलिस विभाग की नसीहत

कहा- वर्दी का सम्मान करें, मर्यादा में रहें, अफसर बोले- तस्वीर से छेड़छाड़ हुई

ट्रोल

तमसा संकेत, एजेंसी

नई दिल्ली। ओडिशा के जगतसिंहपुर जिले के डिप्टी कमिश्नर ऑफ पुलिस (DSP) रश्मि रंजन दास का फोटो वायरल है। इसनें उनके बालों का रंग लाल नजर आ रहा है। उन्हें और पुलिस विभाग को ट्रोल किया जा रहा है। मामले पर केंद्रीय रेंज के पुलिस महानिरीक्षक (IG) सत्यजीत नाइक ने कहा- मैंने जगतसिंहपुर एसपी को निर्देश दिया है कि अधिकारी को मर्यादा बनाए रखने और वर्दी के मुताबिक हेयरस्टाइल रखने को कहा जाए। वहीं, DSP दास का कहना है कि मैंने बालों में रंग नहीं कराया है। वायरल तस्वीर असली नहीं है, मॉर्फ की गई है। बीमारी से मेरे बालों का रंग बदला है, जो मैं सार्वजनिक नहीं करना चाहता। यह समस्या नई नहीं है। IG नाइक ने कहा कि हर बात लिखित आदेश से नहीं चलाई जा सकती। कांस्टेबल से लेकर वरिष्ठ अधिकारी तक सभी को वर्दी का सम्मान करना चाहिए और शालीनता को प्राथमिकता देनी चाहिए।

सीनियर पुलिस अफसर ने कहा- ओडिशा समेत देशभर में कई महिला पुलिसकर्मी भी कॉफी, चॉकलेट, ऐश, ऑबर्न, कैरमेल और गोल्डन जैसे रंगों में बाल रंगवाती हैं। हर किसी के बाल काले ही रहें, ऐसा कोई आदेश नहीं दिया जा सकता। कुछ लोगों के बाल प्राकृतिक रूप से भूरे होते हैं और सफेद होना भी एक स्वाभाविक प्रक्रिया है।

>> (शेष पेज 04 पर)

सम्पादकीय

मोदी- दोनों हाथों में लड्डू

जैसा कि अनुमान लगाया जा रहा था कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) उच्च शिक्षण संस्थानों में जातिगत भेदभाव को रोकने के लिए चाहे जितने कठोर नियम बना ले, उन्हें लागू करना आसान नहीं होगा। और ऐसा ही हुआ भी। यूजीसी द्वारा जारी नए नियमों पर देश भर में सवाल और बवाल दोनों खड़े हुए और उसके बाद सीधे सुप्रीम कोर्ट में इसे रोकने के लिए याचिकाएं दायर हुईं, जिन पर गुरुवार 29 जनवरी को महत्वपूर्ण सुनवाई भी हो गई। इसके बाद सुप्रीम कोर्ट ने यूजीसी के नए नियमों पर अस्थायी रोक लगा दी है। सुप्रीम कोर्ट ने टिप्पणी की कि पहले दृष्टिकोण से यह प्रतीत होता है कि इन नियमों की भाषा में स्पष्टता की कमी है, जिससे उनका गलत उपयोग हो सकता है। मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत ने चेतावनी दी कि ऐसे नियम समाज को विभाजित कर सकते हैं और परिसरों में अमेरिका की तरह नस्लीय विभाजन जैसी स्थिति पैदा कर सकते हैं। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि इन नियमों की जांच की आवश्यकता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उनका दुरुपयोग न हो। कोर्ट ने केंद्र सरकार से इन नियमों की समीक्षा करने को कहा और तब तक उनके लागू होने पर रोक जारी रखने का आदेश दिया। इसके अलावा, सुप्रीम कोर्ट ने सॉलिसिटर जनरल से कहा कि वे एक विशेषज्ञ कमेटी गठित करें। जिसमें कुछ प्रतिष्ठित व्यक्तियों को शामिल करने पर विचार किया जाए, ताकि समाज में बिना भेदभाव के समग्र विकास हो सके। गौरतलब है कि यूजीसी नियमावली, 2026 को 13 जनवरी 2026 को अधिसूचित किया गया था। ये नियम अनुसूचित जाति (एससी), अनुसूचित जनजाति (एसटी) और अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) छात्रों के खिलाफ भेदभाव, उत्पीड़न और आत्महत्या जैसी घटनाओं को रोकने के उद्देश्य से लाए गए हैं। यह 2012 के पुराने नियमों की जगह लाए गए हैं। इन नियमों के तहत सभी उच्च शिक्षा संस्थानों में समता समितियां (इक्विटी कमेटी) गठित करना अनिवार्य किया गया है। इस कमेटी का काम जातिगत भेदभाव की शिकायतों की जांच करना है। लेकिन एससी, एसटी और ओबीसी के हक की बात उठते ही समाज में बवाल खड़ा हो गया। भारत में जाति व्यवस्था इतनी गहरी पैठी हुई है कि जाति के नाम पर उत्पीड़न सामान्य व्यवहार के तौर पर अपना लिया गया है। एक इंसान दूसरे इंसान को केवल जाति के आधार पर अपमानित, शोषित या प्रताड़ित करे, यह चलन सदियों से चला आ रहा है और इसे दूर करने की जितनी कोशिशें की गईं, उतने ज्यादा अड़ंगे सवर्ण समाज की तरफ से लगाए गए। चाहे मंडल कमीशन की सिफारिशें हों या अभी यूजीसी के नए नियम, उन पर समाज का एक तबका ऐसे विरोध में उतरा मानो अपने से निचली जातियों का उत्पीड़न उसका जन्मसिद्ध अधिकार है। इसलिए सुप्रीम कोर्ट में सवर्ण वर्ग की ओर से दायर याचिकाओं में इन नियमों को असंवैधानिक बताया गया है। इसे जाति आधारित भेदभाव करार दिया। याचिकाकर्ताओं में से एक वकील विष्णु शंकर जैन ने कहा कि यह भेदभाव संविधान के अनुच्छेद 14 और 19 के खिलाफ है और इससे शिक्षा क्षेत्र में, समाज में और अधिक खाई पैदा हो सकती है। कितने कमाल की बात है कि शिक्षा क्षेत्र या समाज में जातिगत भेदभाव इन लोगों को तब दिखाई नहीं देता, जब किसी दलित बच्चों को मध्याह्न भोजन में अलग पंक्ति में बिठाने की खबरें आती हैं, या किसी छात्र को उसकी निचली जाति के कारण शारीरिक या मानसिक तौर पर प्रताड़ित किया जाता है। रोहित वेमुला या पायल तड़वी जैसे लोगों को अगर आत्महत्या करने पर मजबूर किया गया, तो उसके पीछे यही सदियों से चला आ रहा जातिगत भेदभाव ही है। बहरहाल, अब शीर्ष अदालत इस मामले पर अगली सुनवाई 19 मार्च को करेगी। तब तक मोदी सरकार जाति या किसी और कारण से समाज को बांटने के नए तरीके सोच ही लेगी। वैसे तो शिक्षा मंत्रालय और यूजीसी ने बचाव में कहा कि नए नियम किसी समुदाय को निशाना नहीं बनाते हैं और समितियां निष्पक्ष होंगी, जिसमें विविध प्रतिनिधित्व होगा। लेकिन सरकार इस बात को अच्छे से जानती थी कि कमजोर तबके के लोगों को सुरक्षा देने या उन्हें आगे बढ़ाने के लिए जो भी फैसले लिए जाएंगे, उस पर समाज के सवर्ण तबके से तीखी प्रतिक्रिया आएगी ही और इस मामले पर राजनीति भी खूब होगी। और ऐसा ही हुआ भी। यूजीसी के नियम केवल कानूनी मसला नहीं है, बल्कि इसके सामाजिक और राजनैतिक पहलू भी हैं। जिनमें चुनावी हित नाप-तौल के ही मोदी सरकार आगे बढ़ी है। पूरे देश में यूजीसी के नए नियमों पर केवल विरोध ही नहीं हुआ, बल्कि नरेन्द्र मोदी-अमित शाह के पोस्टरों पर प्रदर्शनकारियों ने अपना गुस्सा जाहिर किया। उनके खिलाफ कब्र खुदेगी जैसे नारे लगाए गए। मज़े की बात ये है कि इन नारों को लगाने वाले सवर्ण छात्रों को किसी ने देशद्रोही नहीं कहा। जबकि जेएनयू में ऐसे ही नारे लगे थे तो छात्रों को फौरन देशविरोधी करार दिया गया था। जाति पर किस तरह का भेदभाव समाज में किया जाता है, ये उसी का एक उदाहरण है। बहरहाल, यूजीसी के नए नियमों को अभी लाना और फिर लागू होने पर रोक लगाना, सब चुनावी राजनीति की तरफ इशारा करते हैं। बिहार चुनाव में तो एसआईआर के कारण भाजपा को काफी मदद मिल गई। लेकिन तमिलनाडु, प.बंगाल, असम, केरल और पुडुचेरी में भाजपा को तरकश में कुछ और तीर बढ़ाने थे। कांग्रेस जातिगत जनगणना और आरक्षण के मुद्दे पर भाजपा से आगे निकली हुई थी, अगले साल उत्तरप्रदेश में चुनाव हैं।

क्या हम डिजिटल दुनिया की मानसिक ग़ुलामी की तरफ़ तेज़ी से अग्रसर हो रहे हैं?

> आज हम सनातनी होने का बहुत स्वांग रचते हैं. डिजिटल प्लेटफार्म के माध्यम से जो कचरा हमारी युवा पीढ़ी को सेक्स, हिंसा, नशा और व्यसनों का गुलाम बना रहा है. क्या हम उन्हें रोक सकते हैं । कि डिजिटल प्लेटफार्म के सकारात्मक ज्ञान का उपयोग कितने प्रतिशत लोग कर रहे हैं और कितने प्रतिशत लोग कचरा अपने मन मस्तिष्क में भर रहे हैं।

डिजिटल इंडिया बहुत तेज़ी के साथ साकार हुआ । सरकार की मंशा डिजिटल क्रांति के माध्यम से व्यवस्था को पारदर्शी बनाने और सरकार की योजनाओं का लाभ जन जन तक पहुँचाने के साथ नवाचार को प्रोत्साहित कर युवा ऊर्ज़ा को ज्ञान बिज्ञान के शोध में प्रबृत्त कर मानवता के कल्याण के लिए उत्साहित प्रोत्साहित करना है और परिणाम आ भी रहे हैं भारतीय तकनीकी संस्थानों द्वारा चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र नये नये शोध और उपकरण विकसित कर असाध्य रोगों की पहचान उनका उपचार इन सब क्षेत्रों में बड़े सराहनीय कार्य हो रहे हैं । डिजिटल प्लेटफार्म के माध्यम से व्यावसायिक लेन देन खरीद फरोख्त में पारदर्शिता आई है. यह सब डिजिटल इंडिया साकार होने के सकारात्मक पहलू हैं लेकिन डिजिटल इंडिया साकार होने का चिंतित करने वाला कारक यह है कि हम डिजिटल टेक्नोलॉजी के मानसिक गुलामी की तरफ तेजी से आगे बढ़ रहे हैं सरकार और समाज को इस पर गंभीर चिंतन कर प्रभावी मार्ग निकालना होगा अन्यथा आज टेक्नोलॉजी और हथियारों के विकास से अपने को दुनिया का बॉस अपने को बताने वाले मुल्क के बॉस जैसे लोगो की कारगुजारी कहाँ तक पहुंचेगी ठिकाना नहीं. भारतीय उपमहाद्वीप में श्रीलंका, बांग्लादेश , पाकिस्तान और नेपाल इसके प्रमाण है जहाँ इंटरनेट के माध्यम से परोसे जा रहे विषय वस्तु या डिजिटल भाषा में कंटेंट को दुनिया के बॉस कहने वाले मुल्क ने अपना मनचाहा बदलाव करा दिया । हम उस पर न भी सोचे तो भी वर्तमान में डिजिटल माध्यम से जो विषय वस्तु इंटरनेट प्लेटफार्म पर परोसी जा रही है, उसका दुष्प्रभाव आज हम अपने समाज में स्पष्ट देख सकते हैं । औसतन 6-7 घंटे प्रतिदिन लोग मोबाइल फोन के साथ बिता रहे हैं. युवा पीढ़ी रील बनाने और देखने में कितना समय लगा रही है, किसी से छुपा नहीं है. परिवारों में, चौपालों पर, ट्रेनों में, पार्कों में प्रत्येक स्थानों से आपसी संवाद, चर्चाएं-परिचर्चाएं गायब हो गई हैं. समाज में आपसी संवाद सहकार

सौहार्द की भावना लुप्त प्राय है जो भारतीय समाज की रीढ़ थी. अब सबके हाथ में मोबाइल गुरु है. सब उसी में व्यस्त हैं । स्कूल, कॉलेज से दैनन्दिनी सांस्कृतिक और स्पोर्ट्स गतिविधियां समाप्त प्राय होती जा रहीं हैं. आज युवा वर्ग तेजी के साथ मोटापे का शिकार हो रहा है और डायबिटीज, हृदय रोग, रक्तचाप और लीवर की बीमारियों से ग्रसित हो रहा है. जो रोग वृद्धावस्था में घेरते थे, वह वर्तमान में युवापीढ़ी को अपने चपेट में ले रहे हैं जो अत्यंत चिंताजनक है । सरकारों के पुरजोर और प्रभावी प्रयास के बावजूद समाज में महिला अपराध बहुत तेजी से बढ़ते जा रहे हैं. बलात्कार, हत्या जैसी घिनौनी प्रबृत्ति 6 माह, 8 माह तक की बच्चियों को भी नहीं छोड़ रही जो राक्षसी प्रबृत्तियों से मीलों आगे निकल गई है .आए दिन लिब इन में, अवैध संबंधों तथा अनेक तरह से यन्हा तक कि अपने माता पिता भाई बहन और अपने बच्चो की ही जिस जघन्यतम और क्रूरतम तरीके से हत्या और हिसा की घटनाये मीडिया माध्यमों से आये दिन सामने आती है, अंतर्मन को बुरी तरह झकझोर देता है. यह सब ओटीटी, नेटफ्लिक्स, यूट्यूब तथा इंटरनेट पर परोसी जाने वाली सेक्स सामग्री, अश्लीलता, क्रूरतम हिसा और गाली गलौज की भाषा की ही देन है । भारत में परिवार को प्रथम पाठशाला कहा जाता था. अब प्रथम पाठशाला मोबाइल फ़ोन हो गया है जहाँ 2 वर्ष के बच्चे भी मोबाइल चला रहे हैं। पति-पत्नी को अपनी नौकरी की व्यस्तताएं हो गई हैं. सब एकाकी परिवार हो गए हैं. बाबा. दादी. चाचा चाची से अब किसी को मतलब नहीं है. बच्चों को मोबाइल ही पकड़ा दिया जाता है । भारतीय समाज में संयुक्त परिवार होते थे. सब एक साथ रहते थे. बड़े बूढ़े बच्चों की देख रेख करते थे. किस्से कहानियाँ सुना कर उनमे सनातन संस्कृति के संस्कार पिरोते थे. निज गौरव स्वाभिमान, राष्ट्र प्रेम की गाथाये सुनाकर उन्हें राष्ट्र के जिम्मेदार नागरिक बनने की प्रेरणा देते थे । आज के दौर में दलीले दी जाती हैं कि पति-पत्नी दोनों नहीं काम करेंगे तो घर नहीं चलेगा. तब एक ब्यक्ति नौकरी करता था और अपने बच्चों परिवार सभी की शिक्षा पालन पोषण करता था. आवश्यकताएं सीमित थी. आज तो हमारी आवश्यकताएं असीमित हैं. परिणाम समाज के सामने है. हमने जो पश्चिमी दुनिया का तौर तरीके अपनाया, उसका परिणाम संक्रामक बीमारी की तरह विस्तारित होता अवसादजनित बीमारियों का जाल, आत्महत्या की प्रबृत्ति और असाध्य रोगों का विस्तार है । हम आज सनातन धर्म और संस्कृति की बहुत बात करते हैं. क्या सनातन धर्म और संस्कृति के मूल्यों की रक्षा ओटीटी ,नेटफ़्लिक्स यूट्यूब या इंटरनेट जगत में व्याप्त सामग्री से कर सकेंगे ? वर्षों से टीवी और ओटीटी पर प्रसारित किए जाने वाले सीरियल्स ने हमारे परिवारों के परस्पर विश्वास भरोसे को तोड़ने में बड़ी कामयाबी हासिल की है. हमारा सेंसर बोर्ड और नियामक संस्था पूरी तरह मौन हैं क्योंकि आज पूरी दुनिया के लिए भारत सबसे बड़ी बाज़ार है. दुनिया जो भी परोसेगी, यहाँ खपत हो जाएगा और यही हो रहा है । तथाकथित विकसित देशों का सारा कचरा जिसमे प्लॉस्टिक जैसा कचरा जो पर्यावरण को तहस नहस कर रहा है अब सबका डंपिग ग्राउंड भारत है क्योकि दुनिया के लिए हम सबसे बड़ा बाज़ार और यहाँ के निवासी उनके लिए वस्तु है । आज महानगरों या शहरों में पले बढ़े बच्चों और युवाओ को तो छोड़ दीजिए, गांवो की संस्कृति में पले बढ़े लोग भी गूगल गुरु में आँख बंद करके भरोसा करते है. परिणाम यह है जो गूगल महाराज के कारण बीभत्स हृदय बिदारक दुर्घटनाएं सामने आती है । कभी गूगल कार को सड़क से सीधा नदी में ले जाकर समा गए, कभी सीधा गड्ढे में कभी सीधा कुए में या 100 -50 किमी किसी अन्यत्र मार्ग पर लेकिन बावजूद इसके आज युवा सड़क के किनारे कन्ही रुक कर मार्ग का स्पष्टीकरण लेने के बजाय गूगल महाराज के प्रति अंधभक्ति यह है कि हम भले भटकते रहे पर लेकिन टेक्नोलॉजी को सहायक के बजाय हमने अपनी बागडोर ही उसी को सौंप दी है जो भयावह है।

■ हरीशचंद्र श्रीवास्तव

हमारी सबसे बड़ी ...

ललित गर्ग

शिक्षा खौफनाक नहीं, बल्कि स्नेह एवं हौसलों का माध्यम बने

जीवन को दिशा देने वाली शिक्षा यदि भय, हिंसा और दमन का पर्याय बन जाए तो वह सभ्यता की सबसे बड़ी विडंबना कही जाएगी। हाल के वर्षों में पढ़ाई के नाम पर बच्चों पर बढ़ते दबाव, घर और स्कूल में हिंसक व्यवहार तथा प्रतिस्पर्धा की अंधी दौड़ ने शिक्षा की आत्मा पर गहरा आघात किया है। फरीदाबाद की उस हृदयविदारक घटना ने, जिसमें महज गिनती न सीख पाने के कारण एक मासूम बच्ची को पिता की क्रूरता ने मौत के मुंह में धकेल दिया, पूरे समाज को कठघरे में खड़ा कर दिया है। इस तरह खौफनाक होती पढ़ाई अब केवल एक परिवार की त्रासदी नहीं, बल्कि जन-जन से जुड़ी विडम्बना बनती जा रही है। इस तथाकथित शिक्षा की विकृत मानसिकता का भयानक परिणाम है कि आज भी यह माना जाता है कि डर और मार से बच्चों को बेहतर बनाया जा सकता है। ज्ञान की इस सदी में यह सोचना ही शर्मनाक है कि पढ़ाई के नाम पर किसी बच्चे से उसका जीवन, उसका बचपन, उसका आत्मविश्वास छीना जा सकता है। आज शिक्षा धीरे-धीरे मानवीय संवेदनाओं से कटती जा रही है। परीक्षा परिणाम, रैंक, अंक तालिका और प्रतिस्पर्धा के आंकड़े शिक्षा का चेहरा बनते जा रहे हैं। अभिभावक अपने अधूरे सपनों का बोझ बच्चों के नाजुक कंधों पर लाद देते हैं और स्कूल उन्हें प्रदर्शन की मशीन मानकर आंकने लगते हैं। परिणाम यह होता है कि बच्चा पढ़ाई को उत्सव या खोज की प्रक्रिया नहीं, बल्कि एक खौफनाक

दायित्व के रूप में देखने लगता है। घर, जो सबसे सुरक्षित और स्नेहपूर्ण स्थान होना चाहिए, वहीं डर का अड्डा बन जाता है। स्कूल, जो जिज्ञासा और रचनात्मकता को पंख देने का माध्यम होना चाहिए, वह दंड और अपमान का स्थल बन जाता है। ऐसे में मासूम मन कहां जाए, किससे अपने भय और असहायता को साझा करे। मनोविज्ञान और शिक्षा शास्त्र के तमाम अध्ययन यह स्पष्ट कर चुके हैं कि हिंसा, डांट, डर और अपमान बच्चों की सीखने की क्षमता को नष्ट करते हैं। डर के माहौल में बच्चा न तो प्रश्न पूछ पाता है, न प्रयोग कर पाता है और न ही अपनी गलतियों से सीख पाता है। उसकी स्मरण शक्ति, एकाग्रता और निर्णय क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। धीरे-धीरे वह हीनभावना का शिकार हो जाता है और स्वयं को अयोग्य समझने लगता है। यह कुंठा केवल बचपन तक सीमित नहीं रहती, बल्कि पूरे जीवन उसके व्यक्तित्व पर छाया की तरह मंडराती रहती है। ऐसे बच्चे बड़े होकर भी जोखिम लेने से डरते हैं, अपनी बात रखने में संकोच करते हैं और जीवन की प्रतिस्पर्धा में आत्मविश्वास के अभाव में पिछड़ जाते हैं। यह शिक्षा नहीं, बल्कि एक तरह का मानसिक शोषण है। हमारी सबसे बड़ी भूल यह है कि हम हर बच्चे को एक ही मापदंड से आंकना चाहते हैं। जबकि सच्चाई यह है कि हर बच्चा अपने आप में विशिष्ट है। किसी की रुचि गणित में है तो किसी की कला में, कोई खेल में खिलता है तो कोई संगीत या साहित्य में। प्रकृति ने हर बच्चे को किसी न किसी विशेष क्षमता के साथ भेजा है, लेकिन हम उसे पहचानने की बजाय एक तयशुदा पाठ्यक्रम और अपेक्षाओं की बेड़ियों में जकड़ देते हैं। नई शिक्षा नीति 2020 ने बहुआयामी शिक्षा, रुचि आधारित सीख और मूल्यपरक दृष्टि की बात जरूर की है, लेकिन जमीनी स्तर पर अभी भी अंक और रैंक की मानसिकता हावी है। कोचिंग संस्कृति, बोर्ड परीक्षाओं का भय और प्रवेश परीक्षाओं की दौड़ ने शिक्षा को और भी संकीर्ण बना दिया है। इसके साथ ही यह भी एक कटु सत्य है कि कई बच्चे जन्मजात, आनुवंशिक या परिस्थितिजन्य कारणों से सीखने में कठिनाई महसूस करते हैं। दृष्टि दोष, श्रवण समस्या, डिस्लेक्सिया, मानसिक तनाव या पारिवारिक अस्थिरता जैसी स्थितियां उनके शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित कर सकती हैं। ऐसे बच्चों को सबसे अधिक समझ, धैर्य और सहारे की आवश्यकता होती है, लेकिन दुर्भाग्य से वही बच्चे सबसे पहले डांट और दंड का शिकार बनते हैं। शिक्षक और अभिभावक उनकी समस्या को समझने की बजाय उन्हें आलसी या अयोग्य ठहरा देते हैं। यह रवैया न केवल अमानवीय है, बल्कि भविष्य की पीढ़ी के साथ अन्याय भी है। शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण करना है। यदि शिक्षा अहिंसा, करुणा, सहानुभूति और आत्मसम्मान का पाठ नहीं पढ़ाती, तो वह अधूरी है। बच्चों को सिखाने का सबसे प्रभावी माध्यम उदाहरण होता है। जब वे घर और स्कूल में संवाद, धैर्य और प्रेम देखते हैं, तभी वे भी वही मूल्य आत्मसात करते हैं। भय के वातावरण में पले बच्चे या तो दब्बू बन जाते हैं या फिर हिंसा को ही समाधान मानने लगते हैं। समाज में बढ़ती असहिष्णुता और आक्रामकता के पीछे कहीं न कहीं वही शिक्षा व्यवस्था जिम्मेदार है जो संवेदनशील मनुष्यों के बजाय केवल प्रतिस्पर्धी उपभोक्ता तैयार कर रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा बार-बार परीक्षा के तनाव को कम करने और शिक्षा को जीवन से जोड़ने की अपील इस बात का संकेत है कि समस्या गंभीर है। लेकिन केवल भाषणों और नीतियों से बदलाव नहीं आएगा। असली परिवर्तन तब होगा जब अभिभावक यह समझेंगे कि उनका बच्चा उनकी प्रतिष्ठा का साधन नहीं, बल्कि एक स्वतंत्र व्यक्तित्व है। जब शिक्षक यह मानेंगे कि उनका दायित्व केवल पाठ्यक्रम पूरा करना नहीं, बल्कि बच्चों में सीखने की ललक जगाना है।

यह प्रयोग पूरी ...

विवेक रंजन श्रीवास्तव

यूरोप की साझा राजनीति : यूरोपीय संघ

भारत के साथ ट्रेड डील से EU चर्चा में है। यूरोपीय संघ केवल देशों का समूह नहीं है, वह इतिहास की प्रयोगशाला है जहाँ सदियों की लड़ाइयों, साम्राज्यों के उत्थान पतन और सीमाओं के खून से खिंचे नक्शों के बाद यह तय किया गया कि अब तलवार नहीं, समझौता चलेगा। द्वितीय विश्व युद्ध के मलबे से उठकर यूरोप ने यह स्वीकार किया कि राष्ट्रवाद की अति अंततः राष्ट्रों को ही लहूलुहान करती है। इसी स्वीकारोक्ति से जन्म हुआ यूरोपीय संघ का जो आज दुनिया की सबसे संगठित और जटिल बहुराष्ट्रीय संरचनाओं में से एक है। वर्तमान यूरोपीय संघ में सत्ताईस देश शामिल हैं। जर्मनी और फ्रांस इसकी धुरी माने जाते हैं तो इटली और स्पेन इसकी ऐतिहासिक आत्मा हैं। नीदरलैंड, बेल्जियम और लक्जमबर्ग जैसे छोटे देश इसके प्रशासनिक संतुलन को साधते हैं। पूर्वी यूरोप से पोलैंड, हंगरी, चेक गणराज्य, स्लोवाकिया, रोमानिया और बुल्गारिया जैसे देश इसके विस्तार का प्रतीक हैं। बाल्टिक क्षेत्र के एस्टोनिया, लातविया और लिथुआनिया इसकी रणनीतिक उपस्थिति को मजबूत करते हैं। साइप्रस और माल्टा भूमध्य सागर की आवाज हैं जबकि स्कैंडिनेवियाई स्वीडन, फिनलैंड और डेनमार्क इसकी सामाजिक चेतना को आकार देते हैं। ब्रिटेन कभी इसका हिस्सा था पर ब्रेक्जिट ने यह सिखा दिया कि संघ में रहना भी एक राजनीतिक धैर्य की मांग करता है। यूरोपीय संघ की कोई एक राजधानी नहीं है और यही उसकी खासियत भी है। यह सत्ता को एक स्थान पर केंद्रित करने के बजाय उसे फैलाकर संतुलित करता है। ब्रसेल्स इसका प्रशासनिक चेहरा है जहाँ से नीतियां बनती हैं और फाइलें चलती हैं। स्ट्रासबर्ग

लोकतांत्रिक मंच है जहाँ यूरोपीय संसद की बहसें गूंजती हैं। लक्जमबर्ग न्यायिक विवेक का केंद्र है जहाँ कानूनों की आत्मा को परखा जाता है। यह बिखराव दरअसल शक्ति के विकेंद्रीकरण का प्रतीक है जो यूरोपीय संघ की मूल भावना से मेल खाता है। मुद्रा के स्तर पर यूरोपीय संघ ने साहसिक कदम उठाया। यूरो नामक साझा मुद्रा को अपनाकर कई देशों ने अपनी सदियों पुरानी राष्ट्रीय मुद्राओं को इतिहास में दर्ज कर दिया। यह केवल नोट और सिक्के बदलने का मामला नहीं था, यह आर्थिक संप्रभुता का साझा प्रयोग था हालांकि सभी सदस्य देशों ने यूरो को नहीं अपनाया है। कुछ देशों ने अपनी मुद्रा बनाए रखी है ताकि आर्थिक नीतियों पर उनका सीधा नियंत्रण बना रहे। यूरोपीय केंद्रीय बैंक फ्रैंकफर्ट से इस साझा मुद्रा की नब्ज थामे बैठा है और पूरे महाद्वीप की आर्थिक धड़कन को संतुलित रखने की कोशिश करता है। लोकतंत्र की दृष्टि से यूरोपीय संघ एक दिलचस्प संरचना है। यहां नागरिक केवल अपने देश की सरकार नहीं चुनते बल्कि एक महाद्वीपीय संसद के प्रतिनिधि भी चुनते हैं। हर पांच वर्ष में होने वाले यूरोपीय संसद के चुनाव इस बात का संकेत हैं कि नागरिकों की आवाज राष्ट्रीय सीमाओं से आगे जाकर सुनी जाती है।

जरा हटके

आजादी के बाद ...

ज्ञान चंद पाटनी

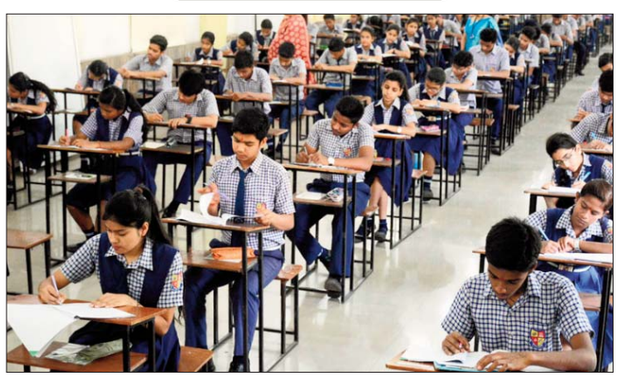

यूजीसी प्रकरण : उच्च शिक्षण संस्थानों को जातीय हिसाब-किताब बराबर करने का केंद्र नहीं बनने दिया जाए

सुप्रीम कोर्ट ने यूनिवर्सिटी ग्रांट्स कमीशन (यूजीसी) के नए नियमों पर रोक लगा दी है। इन नियमों का सवर्ण वर्ग भारी विरोध कर रहा था। कोर्ट ने सुझाव दिया कि विशेषज्ञों की एक समिति इन नियमों में खामियों को भरने पर विचार कर सकती है। यूजीसी के 13 जनवरी 2026 को अधिसूचित 'उच्च शिक्षा संस्थानों में समानता को बढ़ावा देने वाले विनियम' का प्रभाव शिक्षण संस्थानों तक सीमित नहीं रहा। इसे लेकर पूरे देश में बवाल शुरू हो गया। इन नियमों में समान अवसर केंद्र, आरक्षित सदस्यों वाली समितियां बनाने, निगरानी दस्ते गठित करने का प्रावधान है लेकिन झूठी शिकायतों पर मौन साध लिया गया। भले ही इनका लक्ष्य जातीय भेदभाव को समाप्त करना है, लेकिन इससे जातीय राजनीति को हवा मिली और शिक्षण संस्थानों में ही नहीं, पूरे देश में जातीय वैमनस्य बढ़ने की आशंका पैदा हो गई। अब सुप्रीम कोर्ट ने भी माना है कि नए नियमों के प्रावधानों में प्रथम दृष्टया अस्पष्टता है और इनके दुरुपयोग की आशंका है। सवर्ण संगठनों का उग्र विरोध और सोशल मीडिया पर यूजीसी रोलबैक का तूफान इसका प्रमाण है कि इन नियमों को लेकर एक वर्ग में कितना रोष है। इसी के चलते उत्तर प्रदेश के बरेली जिले के सिटी मजिस्ट्रेट अलंकार अग्निहोत्री ने अपने पद से इस्तीफा देने की घोषणा कर दी। जाने—माने कवि कुमार विश्वास की सोशल मीडिया पर प्रतिक्रिया भी चर्चा का विषय बनी। कुमार विश्वास ने दिवंगत कवि रमेश रंजन की एक कविता साझा की। लिखा, चाहे तिल लो या ताड़ लो राजा, राई लो या पहाड़ लो राजा, मैं अभागा सवर्ण हूं, मेरा रोंया—रोंया उखाड़ लो राजा...। उधर कांग्रेस जैसे प्रमुख विपक्षी दल राजनीतिक कारणों से मौन साधे रहे जबकि दलित-ओबीसी संगठनों ने नए नियमों को अपनी विजय माना। राजद प्रवक्ता कंचना यादव का बयान तो बहुत चर्चित हुआ। यूजीसी बिल पर एक टीवी डिबेट में उन्होंने कहा कि आपको यानी सवर्ण समाज को फंसाया जाना चाहिए क्योंकि आपने कभी भी इस देश के 90 प्रतिशत ओबीसी, एससी—एसटी आबादी, माइनॉरिटी को उसका हक नहीं दिया। जिस तरह की बयानबाजी हुई, उससे यह आशंका है कि इन नियमों का

सर्वाधिक विनाशकारी प्रभाव समाज के सामाजिक ताने-बाने पर पड़ेगा। नए नियमों पर सुप्रीम कोर्ट की रोक से विवाद खत्म भले ही नहीं हो लेकिन इसकी उग्रता जरूर कम हो जाएगी। यूजीसी के नए नियमों में प्रावधान किया गया है कि हर उच्च शिक्षण संस्थान में अनिवार्य समान अवसर केंद्र (ईओसी) और दस सदस्यीय समानता समिति का गठन अनिवार्य होगा। समानता समिति में पांच सदस्य आरक्षित वर्गों से होंगे और घूमते-फिरते निगरानी दस्तों की व्यवस्था भी होगी लेकिन, झूठी शिकायतों पर किसी तरह की सजा का प्रावधान न होने के कारण निर्दोषों के उत्पीड़न का मार्ग खुलने की आशंका जताई जा रही है। इन नियमों के चलते उच्च शिक्षा परिसरों में संवाद की जगह संशय का वातावरण बनने की आशंका है। माना जा रहा है कि डर के कारण सवर्ण छात्र आरक्षित वर्गों से दूरी बनाए रखेंगे और एक दूसरे के प्रति अविश्वास का माहौल बन जाएगा। इससे जातीय तनाव बढ़ने का डर भी है। आजादी के बाद जातीय समरसता के जो प्रयास किए जा रहे थे, उन पर इन नियमों पर वज्रपात जैसा असर हो सकता है। सुप्रीम कोर्ट ने भी माना है कि इनका दुरुपयोग होने की आशंका है। जरूरतमंद को सुरक्षा जरूर मिलनी चाहिए लेकिन लक्ष्य जातिविहीन समाज ही होना चाहिए। नए नियमों को 2012 के इसी नाम के यूजीसी (उच्च शिक्षा संस्थानों में समानता को बढ़ावा) विनियमों की जगह लेना था। 2012 के नियम ज्यादातर सलाहकारी प्रकृति के थे। उनमें कहा गया था कि ₹सजा भेदभाव या उत्पीड़न की प्रकृति के अनुरूप होगी₹। इनमें ओबीसी वर्ग भी शामिल नहीं था। ऐसे संस्थान के खिलाफ कार्रवाई का प्रावधान नहीं किया था जो नियमों का पालन नहीं करता है। अब उन संस्थानों को कार्रवाई का सामना करना पड़ सकता है, जो नियमों का पालन नहीं करेंगे। यूजीसी उन्हें आयोग की योजनाओं में भाग लेने, डिग्री और ऑनलाइन पाठ्यक्रम संचालित करने से रोक सकता है। ऐसे संस्थानों को केंद्रीय अनुदान प्राप्त करने के योग्य संस्थानों की सूची से भी हटाया जा सकता है। उच्च शिक्षा को राष्ट्र-निर्माण का आधार स्तंभ माना जाता है। इन नियमों से जुड़ी आशंकाएं सच साबित हुईं तो यह मजबूत स्तंभ हिल सकता है। नियमों से कागजी कार्रवाई बढ़ेगी। शिक्षक खुलकर पढ़ाने से हिचकिचाएंगे, विद्यार्थी चर्चा से कतराएंगे। संस्थानों में नवाचारों पर भी इसका असर हो सकता है। ब्रेन ड्रेन की प्रवृत्ति बढ़ सकती है। उच्च शिक्षण संस्थान ज्ञानार्जन नहीं बल्कि जातीय हिसाब-किताब बराबर करने के केंद्र बन सकते हैं। पिछले कुछ वर्षों में विदेशी विश्वविद्यालयों का भारत की तरफ झुकाव बढ़ा है। अब वे अपने कदम पीछे खींच सकते हैं। केंद्रीय अनुदान रद्द करने, डिग्री कार्यक्रमों पर रोक जैसे नए नियमों से संस्थानों दबाव में आ सकते हैं। भारतीय राजनीति पर इन नियमों का व्यापक प्रभाव पड़ना तय है। राजनीति के चलते जातीय टकराव भड़क सकता है। भारतीय राजनीति में जातीय रंग हमेशा ही रहा है लेकिन अब यह अधिक गहरा हो सकता है। अब यह एससी—एसटी—ओबीसी बनाम सवर्ण का रूप ले सकता है। इसके चलते विकास, रोजगार जैसे मुद्दे दब सकते हैं। आशंका यह है कि कहीं लोकतंत्र जातियों का बंधक बनकर न रह जाएगा। सुप्रीम कोर्ट ने भी कहा है कि नए नियमों से समाज बंटेगा। विपरीत प्रभावों को रोकने के लिए इन नियमों में तत्काल संशोधन आवश्यक हो गया है। अब सुप्रीम कोर्ट की रोक से संशोधन की राह खुल गई है। बेहतर तो यह है कि झूठी शिकायतों पर दंड का प्रावधान जोड़ा जाए। मामला झूठा पाए जाने पर जुर्माना, निष्कासन या कानूनी कार्रवाई का प्रावधान हो। नए नियमों में सवर्णों समेत सभी जातियों को शामिल किया जाए। किसी भी व्यक्ति के साथ जाति, धर्म, नस्ल, क्षेत्र और लिंग के आधार पर भेदभाव करने वालों के खिलाफ कार्रवाई की जाए। नए नियम बनाने के पीछे भावना अच्छी है, किंतु नियमों में असंतुलन से विनाश का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। सुधार के नाम पर उच्च शिक्षण संस्थानों को विनाश की राह पर नहीं धकेला जाना चाहिए। ऐसी दवा क्या काम की जो इलाज करने की बजाय मर्ज को ही बढ़ा दे। यह राहत की बात है कि सुप्रीम कोर्ट ने नए नियमों पर रोक लगा कर जातीय विभाजन की खाई को चौड़ा करने के कुत्सित प्रयासों पर लगाम लगाई है।

सर्च करने पर लिखा आ रहा था- प्रोफाइल उपलब्ध नहीं, फैंस अनुष्का से वजह पूछ रहे थे

कोहली का इंस्टाग्राम अकाउंट 6 घंटे बंद रहा

मुंबई, एजेंसी

विराट कोहली का इंस्टाग्राम अकाउंट गुरुवार रात अचानक बंद हो गया था, जो करीब 6 घंटे बाद फिर से दिखाई देने लगा है। इस दौरान सर्च करने पर उनकी प्रोफाइल नहीं दिख रही थी और डायरेक्ट लिंक से भी अकाउंट नहीं खुल रहा था। गुरुवार रात करीब 2 बजे विराट कोहली का इंस्टाग्राम अकाउंट बंद होने की खबर सामने आई। हालांकि यह साफ नहीं हो पाया है कि अकाउंट ठीक किस समय बंद हुआ था। कोहली के अकाउंट को खोलने पर स्क्रीन पर लिखा आ रहा था- यह पेज उपलब्ध नहीं है। उनके इंस्टाग्राम पर 274 मिलियन (27 करोड़ 40 लाख) से ज्यादा फॉलोअर्स हैं। विराट कोहली का अकाउंट गायब होने के बाद फैंस उनकी पत्नी और बॉलीवुड अभिनेत्री अनुष्का शर्मा के पोस्ट पर कमेंट कर के वजह पूछ रहे थे। इस मामले में अब तक विराट, उनकी मैनेजमेंट टीम या इंस्टाग्राम की ओर से कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया

सामने नहीं आई है। ऐसे में यह साफ नहीं हो पाया है कि अकाउंट को जानबूझकर डीएक्टिवेट किया था या कोई तकनीकी गड़बड़ी थी। हाल के दिनों में कोहली की सोशल मीडिया गतिविधियां भी सीमित रही हैं। उन्होंने पहले कई प्रमोशनल पोस्ट हटाकर क्रिकेट और परिवार को प्राथमिकता देने के संकेत दिए थे। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक कोहली एक प्रमोशनल इंस्टाग्राम पोस्ट के करीब 12 से 14 करोड़ रुपए तक चार्ज करते हैं। फैंस विराट कोहली का इंस्टा अकाउंट एक्सेस करने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन उन्हें प्रोफाइल नहीं मिल रहा था। इसके बाद कई यूजर्स के इस पर रिएक्शन भी आए।

18 जनवरी को शतक लगाया था

वनडे में विराट ने 18 जनवरी को इंदौर में न्यूजीलैंड के खिलाफ शानदार शतकीय पारी खेली थी। इस मुकाबले में कोहली ने 108 गेंदों पर 124 रन बनाए, जिसमें 10 चौके और 3 छक्के शामिल रहे। हालांकि, कोहली के शतक के बावजूद भारतीय टीम मैच जीतने में सफल नहीं हो सकी। विराट अब इंटरनेशनल क्रिकेट में 6 महीने बाद खेलते दिखेंगे। भारत की अगली निर्धारित वनडे सीरीज इंग्लैंड में इंग्लैंड के खिलाफ होगी। यह तीन मैचों की सीरीज 14 जुलाई से शुरू होगी, जिसके मुकाबले एजबेस्टन, कार्डिफ और लॉर्ड्स में खेले जाएंगे।

> विराट कोहली का अकाउंट गायब होने के बाद फैंस ने उनकी पत्नी और बॉलीवुड अभिनेत्री अनुष्का शर्मा के इंस्टाग्राम पोस्ट्स पर कमेंट करना शुरू कर दिया था। कई लोग सिर्फ प्रश्नवाचक चिन्ह (?) डालकर सवाल कर रहे थे, तो कुछ मजाकिया अंदाज में अपनी बात रख रहे थे।

कोहली के नाम 85 इंटरनेशनल सेंचुरी

विराट कोहली के नाम इंटरनेशनल क्रिकेट में कुल 85 शतक दर्ज हैं। टेस्ट क्रिकेट में कोहली ने 123 मैचों की 210 पारियों में 9230 रन बनाए हैं, जिसमें 30 शतक शामिल हैं। 46.85 की औसत से खेलते हुए उनका सर्वोच्च स्कोर 254 नाबाद रहा है। वनडे क्रिकेट में उनका रिकॉर्ड और भी शानदार है, जहां 311 मैचों में 14797 रन के साथ उनके नाम 54 शतक हैं। 58.71 की औसत और 93 से ज्यादा के स्ट्राइक रेट के साथ कोहली सीमित ओवरों के सबसे भरोसेमंद बल्लेबाजों में गिने जाते हैं।

कोहली क्रिकेट के दूसरे टॉप स्कोरर

विराट कोहली सभी फॉर्मेट (टेस्ट+वनडे+टी-20) मिलाकर सबसे ज्यादा रन बनाने वाले दूसरे प्लेयर हैं। उनके 559 मैच में 28215 रन हैं। पहले नंबर पर भारत के ही सचिन तेंदुलकर हैं। तेंदुलकर के नाम 664 मैच में 34357 रन हैं। टी-20 में भी उन्होंने 4188 रन बनाए हैं और 1 शतक जड़ा है।

नहीं रहे पीटी उषा के 'पिलर ऑफ सपोर्ट' श्रीनिवासन

एथलीट से सांसद बनने तक के सफर में रहे साथ

मुंबई, एजेंसी

भारतीय ओलिंपिक संघ (IOA) की अध्यक्ष और राज्यसभा सांसद पीटी उषा के पति वी. श्रीनिवासन का शुक्रवार सुबह निधन हो गया। वे 67 साल के थे। पारिवारिक सूत्रों के अनुसार, श्रीनिवासन शुक्रवार सुबह अपने घर पर अचानक गिर पड़े थे। उन्हें तुरंत नजदीकी अस्पताल ले जाया गया, लेकिन डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस दुखद खबर के बाद पीटी उषा से फोन पर बात की और अपनी संवेदनाएं व्यक्त कीं। पीएमओ के अधिकारियों के मुताबिक, प्रधानमंत्री ने श्रीनिवासन के निधन पर गहरा दुख जताया और शोक संतप्त परिवार को ढांढस बंधाया। श्रीनिवासन एक पूर्व केंद्र सरकार के कर्मचारी थे, लेकिन उन्होंने अपना अधिकांश समय पीटी उषा

के खेल और राजनीतिक सफर को संवारने में लगाया। श्रीनिवासन को खेल जगत में पीटी उषा के 'पिलर ऑफ सपोर्ट के रूप में जाना जाता था। उषा के एक एथलीट के रूप में शानदार करियर से लेकर आईओए अध्यक्ष बनने और राज्यसभा सांसद के रूप में उनके राजनीतिक सफर तक, श्रीनिवासन हर कदम पर उनके साथ रहे। वे अक्सर महत्वपूर्ण बैठकों और कार्यक्रमों में उषा के साथ देखे जाते थे।

फास्ट न्यूज

स्विगी को ₹1,065 करोड़ का घाटा

मुंबई। ऑनलाइन फूड डिलीवरी प्लेटफॉर्म स्विगी का अक्टूबर-दिसंबर तिमाही में नेट लॉस यानी शुद्ध घाटा सालाना आधार पर 33% बढ़कर 1,065 करोड़ रहा। पिछले साल की समान तिमाही में कंपनी को 799 करोड़ का घाटा हुआ था। वहीं कंपनी के ऑपरेशनल रेवेन्यू में 54% की बढ़ोतरी हुई है। वित्त वर्ष 26 की तीसरी तिमाही में कंपनी का ऑपरेशनल रेवेन्यू 6,148 करोड़ रुपए रहा।

बांग्लादेश ने भारत से स्पेशल इकोनॉमिक जोन छीना

ढाका। बांग्लादेश ने चटगांव में भारत को दी गई सेज (स्पेशल इकोनॉमिक जोन) का भूमि आवंटन रद्द कर दिया गया है। यूनुस सरकार ने यह जमीन चीन को ड्रोन फैक्ट्री बनाने के लिए दे दी है। लगभग 850 एकड़ में फैली इस जमीन में इस साल के अंत तक प्रोडक्शन शुरू हो जाएगा। चीन ड्रोन टेक्नोलॉजी ट्रांसफर करने को भी राजी हो गया है। यहां मीडियम रेंज और वर्टिकल लिफ्ट वाले ड्रोन बनेंगे। चटगांव प्लांट भारतीय सीमा से 100 किमी दूर है। बांग्लादेश दक्षिण एशिया में भारत-पाकिस्तान के बाद ड्रोन बनाने वाला तीसरा देश बन जाएगा। दूसरी ओर चीन ने बीते साल बांग्लादेश को 20 J-10CE फाइटर जेट देने की डील भी की थी। ये सप्लाई भी इस साल के अंत से शुरू हो जाएगी। चीन ने बांग्लादेश को पेमेंट में भी बड़ी मोहलत दी है। भारत और बांग्लादेश के बीच 2015 में एक समझौता हुआ था।

सिक्योरिटी गार्ड ने शाहरुख का चश्मा उतरवाया

नई दिल्ली। शाहरुख खान का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, जिसमें मुंबई एयरपोर्ट पर सुरक्षा जांच के दौरान एक्टर से चश्मा उतरवाया जाता है। इस दौरान एक्टर ने नियमों का पालन किया और मुस्कुराते हुए नजर आए। दरअसल, शाहरुख खान को आज सुबह मुंबई एयरपोर्ट पर स्पॉट किया, जहां से वह दुबई के लिए रवाना हुए। शाहरुख खान दुबई मॉल ग्लोबल फैशन अवार्ड्स में शिरकत करेंगे।

'अक्षय कुमार मनी माइंडेड हैं'

प्रोड्यूसर शैलेन्द्र सिंह ने एक्टर को शांत रहने की सलाह देने की बात कही

नई दिल्ली, एजेंसी

फिल्ममेकर और प्रोड्यूसर शैलेन्द्र सिंह ने एक्टर अक्षय कुमार को लेकर कहा कि वह मनी माइंडेड हैं। वह पहले बिजनेस-मैन हैं और बाद में एक्टर हैं। शैलेन्द्र सिंह ने यह बात हाल ही में सिद्धार्थ कन्नन को दिए एक इंटरव्यू में कही। इंटरव्यू में शैलेन्द्र ने साल 2009 की फिल्म 8 x 10 तस्वीर से जुड़ा अपना अनुभव शेयर। उन्होंने यह कहा कि इस फिल्म की असफलता के बाद उन्होंने फिल्म बनाना छोड़ दिया था। शैलेन्द्र सिंह ने कहा कि उनका बयान किसी निजी नाराजगी पर आधारित नहीं है। उन्होंने बताया कि अक्षय एक अच्छे इंसान हैं और दोनों के बीच रिश्ता ठीक था। उन्होंने बताया कि वे साथ में खेल भी खेलते थे। शैलेन्द्र ने कहा कि जब उन्हें अक्षय के साथ फिल्म बनाने का मौका मिला, तो वे बहुत खुश थे उन्होंने बताया कि फिल्म 8 x 10 तस्वीर उस समय बनी थी जब अक्षय कुमार और डायरेक्टर नागेश कुकुनूर दोनों अपने करियर के अच्छे दौर में थे। शुरुआत में यह फिल्म 30 से 35 करोड़ रुपए के बजट में बनाई जानी थी। शूटिंग के लिए मुनार की जगह तय की गई,

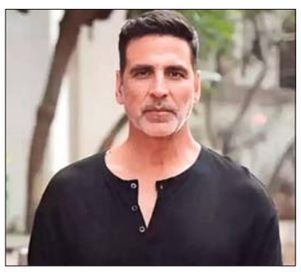

लेकिन अक्षय के व्यस्त शेड्यूल की वजह से प्लानिंग बदलती चली गई। शैलेन्द्र ने कहा, "मुनार से हम कैलगरी गए, फिर केप टाउन गए और उसके बाद कई दूसरी जगहों पर शूटिंग हुई।" उन्होंने बताया कि बार-बार लोकेशन बदलने से फिल्म का बजट काफी बढ़ गया। यह फिल्म अक्षय की सुपरहिट फिल्म सिंह इज किंग के तुरंत बाद रिलीज हुई थी, लेकिन बॉक्स ऑफिस पर यह फिल्म पूरी तरह फ्लॉप रही। फिल्म के फ्लॉप होने के बाद शैलेन्द्र ने अक्षय से उनकी फीस का कुछ हिस्सा वापस करने की बात कही। उन्होंने कहा, "मैंने उनसे कहा कि भाई, आपकी फिल्म देखने कोई नहीं आया। आपको भी कुछ जिम्मेदारी लेनी होगी। आपने मुझसे बहुत पैसे लिए हैं।"

विवेक ओबेरॉय की कॉन्फ्रेंस के बाद गुस्से में थे सलमान

नई दिल्ली, एजेंसी

फिल्म प्रोड्यूसर शैलेन्द्र सिंह ने हाल ही में बताया कि विवेक ओबेरॉय द्वारा प्रेस कॉन्फ्रेंस में सलमान पर आरोप लगाने के बाद सलमान बहुत गुस्से में थे। गौरतलब है कि फिल्म इंडस्ट्री में सलमान खान और विवेक ओबेरॉय के बीच पुराना विवाद रहा है। यह विवाद उस समय और बढ़ गया था, जब विवेक ने आरोप लगाया था कि सलमान ने उन्हें धमकी दी है। अब इस मामले को लेकर प्रोड्यूसर शैलेन्द्र सिंह ने कुछ बातें सामने रखी हैं। हाल ही में सिद्धार्थ कन्नन को दिए इंटरव्यू में शैलेन्द्र सिंह ने बताया कि विवेक की प्रेस कॉन्फ्रेंस के बाद वे सलमान के घर गए थे। उस वक्त एक्टर काफी नाराज थे। किसी को चोट न पहुंचाना और खुद पर आरोप न

आने देना, मुझे लगता है कि यह सही तरीका था। इंटरव्यू में शैलेन्द्र ने सलमान को लेकर यह भी कहा कि सलमान जंगल में पैदा हुआ टाइगर है, लेकिन अब जू में है। उनके मुताबिक सफलता मिलने के बाद सलमान डरपोक हो गए।शैलेन्द्र के मुताबिक, सलमान ने उनकी बात मानी और उस समय कोई रिएक्शन नहीं दिया।

सलमान ने लड़ाई चुपचाप लड़ी: शैलेन्द्र

फिल्म प्रोड्यूसर ने इंटरव्यू में यह भी कहा कि उसने (सलमान) वह लड़ाई चुपचाप लड़ी। मुझे लगता है कि अब विवेक बॉलीवुड में काम नहीं कर रहा है। मुझे पूरी तरह नहीं पता, लेकिन ऐसा ही लगता है। विवेक भी ऐसा कहते हैं, वह बहुत समझदारी भरा कदम था। किसी को चोट न पहुंचाना और खुद पर आरोप न आने देना, मुझे लगता है कि यह सही तरीका था। इंटरव्यू में शैलेन्द्र ने सलमान को लेकर यह भी कहा कि सलमान जंगल में पैदा हुआ टाइगर है, लेकिन अब जू में है। उनके मुताबिक सफलता मिलने के बाद सलमान डरपोक हो गए।

> शैलेन्द्र ने कहा कि उन्होंने सलमान को सलाह दी थी कि जल्दबाजी में कोई कदम न उठाएं। उन्होंने एक्टर से कहा, "जिंदगी में हमें रिएक्ट नहीं, बल्कि एक्ट करना चाहिए। जो करना है, वह बाद में भी किया जा सकता है। अभी शांति से बैठो और समय को अपना काम करने दो।"

800% तक खर्च कम होगा, 16 कंपनियों से समझौता, बदले में 3 साल का टैरिफ छूट दिया

अमेरिका में सस्ती दवाओं के लिए वेबसाइट लॉन्च करेंगे ट्रम्प

वॉशिंगटन, एजेंसी

ट्रम्प प्रशासन इस महीने 'ट्रम्प Rx' नाम की एक नई सरकारी वेबसाइट लॉन्च करने जा रहा है। इस प्लेटफॉर्म के जरिए मरीज दवा कंपनियों से सीधे कम दामों पर दवाएं खरीद सकेंगे। प्रशासन का दावा है कि इस पहल से अमेरिकी लोगों के दवा खर्च को 800% तक कम किया जाएगा। अमेरिकी रेडियो NPR की रिपोर्ट के मुताबिक ट्रम्प प्रशासन ने पिछले साल सितंबर से अब तक 16 बड़ी दवा कंपनियों के साथ समझौते किए हैं। इन समझौतों को 'मोस्ट फेवर्ड नेशन (MFN)' डील्स कहा गया। बदले में दवा कंपनियों को 3 साल तक इम्पोर्टेड दवाओं पर टैरिफ से छूट मिलेगी। यह योजना चुनावी वादों और 'अमेरिका फर्स्ट' हेल्थ पॉलिसी से जुड़ी मानी जा रही है। ट्रम्प का कहना है कि दूसरे अमीर देश अमेरिका

में बनी दवाइयां कम कीमत पर खरीदते हैं, जबकि अमेरिकियों को इसके लिए तीन गुना ज्यादा कीमत चुकाना पड़ता है। यह प्रोग्राम सुनिश्चित करेगा कि दवा कंपनियां उसी दाम पर दवा बेचे जो बाकी देशों में मिल रही है। अमेरिकी कंपनियां दवाओं के रिसर्च, टेस्टिंग, फैक्ट्री करोड़ों-खरबों रुपये खर्च करती है। दुनिया भर में यह दवा बेची जाती है। अमेरिका में यह दवा बहुत महंगी है, जबकि यूरोप, कनाडा, जापान जैसे अमीर देशों में वही दवा बहुत सस्ती मिलती है। दरअसल, उन देशों की सरकार कम कीमत पर दवा खरीदने की मांग करती है और ऐसा न करने पर डील रोकने का खतरा रहता है। बाजार खोने के डर से कंपनियां कम कीमत में दवाइयां मुहैया करवाती है। इससे विदेशी देशों को भी ज्यादा कीमत चुकानी पड़ेगी, जैसे ब्रिटेन के साथ हुए समझौते में नई दवाओं की कीमत 25% बढ़ाई गई है।

ट्रम्प प्रशासन मरीजों को दवा वेबसाइटों के जरिए पहुंचाएगी।

दवा कंपनियां ट्रम्प आरएक्स से क्यों डरी हुई हैं

ट्रम्पRx की सबसे बड़ी बात यह है कि इसमें सरकार दवाओं की कीमत तय करने में सीधी दखल देना चाहती है। अभी तक अमेरिका में दवा कंपनियां अपनी नई दवाओं की कीमतें खुद तय करती हैं। अगर ट्रम्पRx लागू होता है, तो दवाओं की कीमत सरकार तय करेगी। दवा कंपनियों को डर है कि इससे उनका मुनाफा सीधे घट जाएगा। दूसरी बड़ी वजह यह है कि ट्रम्पRx के तहत अमेरिका, विदेशों में बिकने वाली सस्ती दवाओं की कीमत को आधार बना सकता है। यानी अगर वही दवा यूरोप या कनाडा में सस्ती है, तो अमेरिका में भी महंगी नहीं बेची जा सकेगी। कंपनियों को यह मॉडल पसंद नहीं, क्योंकि अमेरिका अब तक उनका सबसे बड़ा और सबसे मुनाफे वाला बाजार रहा है।

> *ट्रम्प का मानना है कि अमेरिकी लोगों के पैसे से ही नई दवाइयां बनती हैं। विदेशी देश कम पैसा देकर इसका फायदा उठाते हैं। ट्रम्प के मुताबिक वह अमेरिका की मेहनत पर 'फ्री राइड' करते हैं। इसलिए इस एमएफएन प्रोग्राम में फैसला किया गया है कि अब अमेरिका में भी दवा की कीमत सबसे कम होगी जो किसी अमीर देश में मिलती है। कंपनियों से कहा गया कि अमेरिका को भी वही सस्ती डील दो।*

अमेरिका में जन्मे बच्चों को ₹92 हजार देंगे ट्रम्प

निवेश में बैंक-टेक कंपनियां भी शामिल

वॉशिंगटन, एजेंसी

अमेरिका में जन्म लेने वाले बच्चों को सरकार की ओर से 1,000 डॉलर (92 हजार रुपए) दिए जाएंगे। यह रकम बच्चों के नाम से खोले जाने वाले एक स्पेशल अकाउंट में जमा की जाएगी। यह योजना पिछले साल राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने शुरू की थी। अब इसे अमेरिका की बड़ी-बड़ी कंपनियों का समर्थन मिलने लगा है। इस योजना को 'ट्रम्प अकाउंट' कहा जाता है। व्हाइट हाउस के मुताबिक, यह एक टैक्स-फ्री सेविंग अकाउंट होगा, जिसमें सरकार बच्चों के भविष्य के लिए शुरुआती निवेश करेगी। इस खाते में जमा रकम शेयर बाजार में निवेश की जाएगी ताकि समय के साथ यह बढ़ सके। इस योजना का लाभ उन बच्चों को मिलेगा जो 1 जनवरी 2025 से 31 दिसंबर 2028 के बीच अमेरिका में पैदा होंगे। इससे हर साल करीब 36 लाख नवजात बच्चों को फायदा

होगा। इसका मकसद बच्चों को जन्म से ही वित्तीय शुरुआत देना और लंबे समय तक निवेश के जरिए धन बढ़ाना है। ताकि वे 18 साल की उम्र में पढ़ाई, बिजनेस शुरू करने, घर खरीदने या अन्य जरूरतों के लिए फंड का इस्तेमाल कर सकें। अब कई बड़ी कंपनियां भी इस योजना में आगे आ रही हैं। बैंक ऑफ अमेरिका और जेपी मॉर्गन चेस ने घोषणा की है कि वे अपने कर्मचारियों के बच्चों के ट्रम्प अकाउंट में सरकार की तरह 1,000 डॉलर की बराबर राशि जमा करेंगे।

0000 गोल्ड एक दिन में ₹6,865 और चांदी ₹22,825 सस्ती हुई, वजह मुनाफा वसूली

सोना-चांदी के दाम लगातार बढ़ने के बाद गिरे

नई दिल्ली, एजेंसी

चांदी-सोने के दाम में लगातार चार दिन ऑल टाइम हाई पर रहने के बाद आज 30 जनवरी को बड़ी गिरावट आई है। एक्सपर्ट्स के मुताबिक, इसकी मुख्य वजह मार्केट में मुनाफा वसूली है। सोना एक दिन में 6,865 रुपए और चांदी 22,825 रुपए सस्ती हुई है। इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन (IBJA) के अनुसार, 10 ग्राम 24 कैरेट सोने का भाव 1,68,475 रुपए पर आ गया है। इससे पहले गुरुवार को सोने का भाव 1,75,340 रुपए/10g था। वहीं, एक किलो चांदी की कीमत 3,57,163 रुपए किलो पर आ गई है। इससे पहले गुरुवार को इसकी कीमत 3,79,988 रुपए किलो थी। IBJA की सोने की कीमतों में 3% GST, मेकिंग चार्ज, ज्वेलर्स मार्जिन शामिल नहीं होता। इसलिए शहरों के रेट्स इससे अलग होते हैं। इन रेट्स का इस्तेमाल

RBI सोवरेन गोल्ड बॉन्ड के रेट तय करने के लिए करता है। कई बैंक गोल्ड लोन के रेट तय करने के लिए इसे इस्तेमाल करते हैं। इस साल जनवरी के 29 दिन में ही सोने की कीमत 35,280 रुपए बढ़ चुकी है। 31 दिसंबर 2025 को 10 ग्राम 24 कैरेट सोना 1,33,195 रुपए का था, जो अब 1,68,475 रुपए हो गया है। वहीं, चांदी 1,26,743 रुपए महंगी हो गई है। 31 दिसंबर 2025 को एक किलो चांदी की कीमत 2,30,420 रुपए थी, जो अब 3,57,163 रुपए प्रति किलो पहुंच गई है।

सोना खरीदते समय इन 2 बातों का रखें ध्यान

1. **सर्टिफाइड गोल्ड ही खरीदें:** हमेशा ब्यूरो ऑफ इंडियन स्टैंडर्ड (बीआईएस) का हॉलमार्क लगा हुआ सर्टिफाइड गोल्ड ही खरीदें। ये नंबर अल्फान्यूमेरिक यानी कुछ इस तरह से हो सकता है- एजेड4524। हॉलमार्किंग से पता चलता है कि सोना कितने कैरेट का है।
2. **कीमत क्रॉस चेक करें:** सोने का सही वजन और खरीदने के दिन उसकी कीमत कई सोर्सेज (जैसे इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन की वेबसाइट) से क्रॉस चेक करें। सोने का भाव 24 कैरेट, 22 कैरेट और 18 कैरेट के हिसाब से अलग-अलग होता है।

रुपया रिकॉर्ड ऑल टाइम लो पर, विदेशी वस्तुएं महंगी होंगी

नई दिल्ली। भारतीय रुपया डॉलर के मुकाबले ऑल टाइम लो पर पहुंच गया है। आरबीआई के मुताबिक, गुरुवार (29 जनवरी) को 1 डॉलर के मुकाबले रुपया 27 पैसा गिरकर 91.96 के रिकॉर्ड निचले स्तर पर बंद हुआ। विदेशी निवेशकों (FPI) की लगातार बिकवाली और वैश्विक स्तर पर बढ़ते व्यापारिक तनाव की वजह से रुपए में यह गिरावट देखी जा रही है। साल 2026 की शुरुआत से ही रुपया दबाव में है। पिछले साल दिसंबर 2025 में पहली बार रुपया 90 के स्तर के पार गया था। अब महज 29 दिन के भीतर यह 92 के स्तर के करीब आ गया है। मार्केट एक्सपर्ट्स का मानना है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की नई टैरिफ नीतियों और ग्लोबल टेंशन के चलते दुनियाभर के निवेशक गोल्ड और डॉलर में निवेश बढ़ा रहे हैं। रुपए में गिरावट का मतलब है कि भारत के लिए चीजों का इम्पोर्ट महंगा होना है। इसके अलावा विदेश में घूमना और पढ़ना भी महंगा हो गया है।

मेरे कहने पर पुतिन ने यूक्रेन पर हमला रोका : ट्रम्प

सर्दी में मैंने कीव पर गोलीबारी न करने को कहा, रूस से पुष्टि नहीं

वॉशिंगटन, एजेंसी

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने व्हाइट हाउस में गुरुवार को कहा कि रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने मेरे कहने पर एक हफ्ते के लिए यूक्रेन की राजधानी कीव पर हमला रोक दिया है। उन्होंने कहा कि मैंने व्यक्तिगत रूप से राष्ट्रपति पुतिन से इस असाधारण ठंड के दौरान कीव और अन्य शहरों पर गोलीबारी न करने को कहा है। ट्रम्प ने आगे कहा कि पुतिन इस पर सहमत हो गए हैं। हालांकि रूस की ओर से इसकी कोई पुष्टि नहीं हुई है। राष्ट्रपति ट्रम्प अपने कार्यकाल का एक साल पूरा होने पर मीडिया से बात कर रहे थे। यूक्रेन की राजधानी पर हमलों में रोक लगाने की यह अपील ऐसे समय में आई है जब रूस देश के महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे पर बमबारी कर रहा है, जिससे देश भर में कई

लोग तेज सर्दी में बिना गर्मी के रह रहे हैं। इस बीच, अधिकारियों ने गुरुवार को बताया कि यूक्रेन के दक्षिणी जापोरिज्जिया क्षेत्र में रात भर रूसी ड्रोन हमले में तीन लोग मारे गए। यूक्रेनी राष्ट्रपति वलोडिमिर जेलेंस्की ने चेतावनी दी कि इस हफ्ते के अंत में अमेरिका की मध्यस्थता से होने वाली शांति वार्ता की योजनाओं के बावजूद मॉस्को एक और बड़े पैमाने पर हमले की योजना बना रहा है। जेलेंस्की ने कहा कि यूक्रेनी खुफिया रिपोर्टों से संकेत मिलता है कि रूस एक बड़े हवाई हमले के लिए सेना जुटा रहा है। ज़ेलेंस्की ने कहा कि चल रहे हमले शांति वार्ता को बदनाम करते हैं। उन्होंने बुधवार देर रात कहा, हर एक रूसी हमला ऐसा करता है। मंगलवार को पब्लिश हुई एक अंतरराष्ट्रीय थिंक टैंक की रिपोर्ट के मुताबिक युद्ध के दौरान दोनों पक्षों के मारे गए, घायल या लापता सैनिकों की संख्या वसंत तक 2 मिलियन तक पहुंच सकती है। यूक्रेन के रक्षा मंत्री मायखाइलो फेडोरोव के मुताबिक रूस ने पिछले एक महीने में ही यूक्रेन पर 6,000 से ज्यादा ड्रोन लॉन्च किए हैं। उन्होंने बुधवार देर रात कहा कि रूस लगातार अपने ड्रोन और अपनी रणनीति में सुधार कर रहा है, जिससे यूक्रेन को अपनी हवाई रक्षा रणनीति बदलनी पड़ी है।

सऊदी जाते वक्त तकनीकी खराबी आई, मुंबई में उतरने की परमिशन नहीं मिली तो लौटा

विमान की इमरजेंसी लैंडिंग, 275 यात्री थे

तमसा संकेत, एजेंसी

सरोजनी नगर, लखनऊ। उत्तर प्रदेश के लखनऊ एयरपोर्ट से सऊदी अरब जा रहे एक विमान की शुक्रवार को इमरजेंसी लैंडिंग कराई गई। विमान में उड़ान के कुछ समय बाद तकनीकी दिक्कत आ गई थी। इसके बाद पायलट ने लखनऊ एयरपोर्ट से संपर्क किया। लखनऊ से इमरजेंसी लैंडिंग की अनुमति मिलते ही विमान वापस लौट आया। करीब 82 मिनट में विमान सुरक्षित रूप से लखनऊ एयरपोर्ट पर उतरा। सूत्रों ने बताया कि विमान की लैंडिंग के समय पायलट ने उसके पहिये खोलकर विमान को रनवे पर उतारा, तभी उसके बाएं तरफ के पहिए में खराबी आ गई। यह खराबी हाइड्रोलिक सिस्टम में अचानक लीकेज होने की वजह से बताई जा रही है। इसी से तेज धुएं के साथ चिनगारी उठने से वहां हड़कंप जैसी स्थिति बन गई।

इसी एयरलाइंस के विमान में लैंडिंग के वक्त चिंगारी निकली थी

15 जुलाई 2025 को सऊदिया अरबिया एयरलाइंस के ही विमान में लखनऊ एयरपोर्ट पर लैंडिंग के दौरान खराबी आ गई थी। पहियों के पास से चिंगारी निकलने लगी थी। फ्लाइट एसवी-3112 की लैंडिंग के दौरान पहिए से चिंगारी और धुआं निकलने लगा। पायलट ने तुरंत स्थिति को भांपते हुए विमान को रोक दिया। एयर ट्रैफिक कंट्रोलर को सूचना दी। इस दौरान विमान में 242 हजयात्री बैठे हुए थे।

रनवे पर उतरते ही निकलने लगा था धुआं

सूत्रों ने बताया कि विमान की लैंडिंग के समय पायलट ने उसके पहिये खोलकर विमान को रनवे पर उतारा, तभी उसके बाएं तरफ के पहिए में खराबी आ गई। यह खराबी हाइड्रोलिक सिस्टम में अचानक लीकेज होने की वजह से बताई जा रही है। इसी से तेज धुएं के साथ चिनगारी उठने से वहां हड़कंप जैसी स्थिति बन गई। अगर यह खराबी विमान के टेकऑफ के समय हो जाती, तो बड़ा हादसा हो सकता था। सूत्रों ने बताया कि हज यात्रियों की वापसी के दौरान सऊदी अरबिया एयर-लाइंस का विमान जेद्दा से हज यात्रियों को लेकर यहां आता है।

तकनीकी खराबी दूर की जा रही

जानकारी के मुताबिक, विमान का तय समय दोपहर 12:05 बजे था, लेकिन यह 12:23 बजे उड़ान भर सका। दोपहर करीब 1:45 बजे विमान को बीच रास्ते से वापस लाना पड़ा। फिलहाल विमान लखनऊ एयरपोर्ट पर खड़ा है। यात्रियों को अभी विमान से उतारा नहीं गया है। तकनीकी खराबी दूर करने के लिए इंजीनियरों की टीम काम कर रही है। विमान में केबिन प्रेशर आर्टिफिशियल एयर प्रेशर है, जिसे हवाई जहाज के अंदर बनाए रखा जाता है। इससे जब विमान 30,000 से 40,000 फीट की ऊंचाई पर होता है तब भी लोगों को सांस लेने में दिक्कत नहीं होती। केबिन प्रेशर उस ऊंचाई में भी 6,000-8,000 फीट की ऊंचाई के बराबर वाला एयर प्रेशर बनाकर रखता है। इससे यात्री आसानी से सांस लेते रहते हैं।

66 विमान में केबिन प्रेशर आर्टिफिशियल एयर प्रेशर है, जिसे हवाई जहाज के अंदर बनाए रखा जाता है। इससे जब विमान 30,000 से 40,000 फीट की ऊंचाई पर होता है तब भी लोगों को सांस लेने में दिक्कत नहीं होती। केबिन प्रेशर उस ऊंचाई में भी 6,000-8,000 फीट की ऊंचाई के बराबर वाला एयर प्रेशर बनाकर रखता है। इससे यात्री आसानी से सांस लेते रहते हैं।

सूत्रों के मुताबिक, जब विमान मुंबई के पास पहुंचा, तब केबिन प्रेशर में समस्या आ गई। इसके चलते कुछ यात्रियों को सांस लेने में परेशानी होने लगी। हालात देखते हुए पायलट ने पहले मुंबई एयरपोर्ट से संपर्क कर लैंडिंग की अनुमति मांगी, लेकिन वहां से परमिशन नहीं मिली। यह विमान सऊदिया अरबिया एयरलाइंस का था। फ्लाइट नंबर एसवी-891 जेद्दा जा रही थी। विमान में 275 यात्री, 4 पायलट और 6 क्रू मेंबर सवार हैं।

रिटायर्ड सैन्य अफसर के घर करोड़ों की चोरी

मां-बेटी अस्पताल गई, चोरों ने उड़ाए जेवर

तमसा संकेत, एजेंसी

लखनऊ। लखनऊ के आशियाना इलाके में चोरों ने रिटायर्ड सैन्य अफसर के बंद घर को निशाना बनाकर एक करोड़ रुपए से अधिक के जेवरात पर हाथ साफ कर दिया। घटना के समय घर की मालकिन अपनी बेटी के साथ अस्पताल गई थी। मामले में आशियाना कोतवाली में मुकदमा दर्ज कराया गया है। रुचिखंड प्रथम निवासी निदा खान ने पुलिस को बताया कि वह नर्सिंग पेशे से जुड़ी हैं। उनके पिता अनवर हुसैन, जो सेना में लेफ्टिनेंट पद से सेवानिवृत्त थे, का वर्ष 2016 में निधन हो चुका है। इसके बाद से वह अपनी मां शाहेदा हुसैन के साथ रह रही हैं। सोमवार को निदा के पति अजहर का खदरा स्थित एक निजी अस्पताल में पित्त का ऑपरेशन था। इसी वजह से मां-बेटी घर में ताला लगाकर अस्पताल चली गईं। बुधवार दोपहर जब शाहेदा हुसैन घर

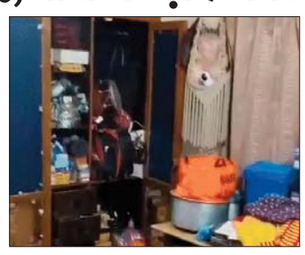

लौटीं तो अंदर का नजारा देखकर सन्न रह गईं। कमरों में सारा सामान बिखरा पड़ा था और बक्सों में रखे एक करोड़ रुपये से अधिक के कीमती जेवर गायब थे। घटना की जानकारी तुरंत डायल-112 पर दी गई। सूचना मिलते ही आशियाना इंस्पेक्टर छत्रपाल सिंह पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे और जांच शुरू की। पुलिस आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाल रही है और जल्द खुलासे का दावा कर रही है।

फास्ट न्यूज

बीएमडब्ल्यू से जा रही महिला यूट्यूबर से छेड़खानी

गौतम बुद्ध नगर। ग्रेटर नोएडा में जानी-मानी महिला सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर और यूट्यूबर का पीछा करने का मामला सामने आया है। आरोप है कि दिल्ली के DND फ्लाईओवर से लेकर ग्रेटर नोएडा के परी चौक तक करीब 27 किलोमीटर तक कार सवार युवकों ने उनका पीछा किया। बार-बार ओवरटेक किया। चलती कार की विंडो से लटकर अश्लील इशारे किए। सिलसिला महिला के घर पहुंचने तक चलता रहा।

गाजीपुर के इंजीनियर की अंडमान में सड़क हादसे में मौत

जमानियां। गाजीपुर जिले के जमानियां तहसील के सुहवल थाना क्षेत्र के बेमुआं गांव निवासी 34 वर्षीय मैकेनिकल इंजीनियर रामकेशर सिंह कुशवाहा की अंडमान-निकोबार द्वीप समूह में सड़क हादसे में मौत हो गई है। इस घटना से पूरे इलाके में शोक की लहर है। बीते देर शाम जब एम्बुलेंस से उनका पार्थिव शरीर गांव पहुंचा, तो परिजनों की चीख-पुकार से माहौल गमगीन हो गया। पूरा गांव सन्नाटे में डूब गया और हर आंख नम थी। रामकेशर की पत्नी निक्की ने अपने सुहाग का सिंदूरदानी पति के पार्थिव शरीर पर र खकर अंतिम विदाई दी, जिससे वहां मौजूद सभी लोग भावुक हो गए।बीते देर रात को ही मेदनीपुर श्मशान घाट पर मृतक का अंतिम संस्कार किया गया। छोटे भाई बब्बन सिंह कुशवाहा ने मुखाग्नि दी,जिसे देखकर वहां मौजूद लोगों की आंखें छलक पड़ीं।

पद्मश्री पाने वाले डॉ. लाहिरी 17 दिन से बीमार

वाराणसी। पद्मश्री से सम्मानित सीनियर कार्डियोथोरेसिक सर्जन प्रो. टीके लाहिरी 17 दिन से बीमार है। वह दो दिन से सर सुंदरलाल अस्पताल के ICU में भर्ती हैं। शुक्रवार को BHU के कुलपति प्रो. अजित कुमार चतुर्वेदी ने हेल्थ की जानकारी ली। कुलपति के साथ IMS के निदेशक प्रो. एसएन शंखवार और सर सुंदरलाल अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक प्रो. कैलाश कुमार भी रहे।

बच्ची के सिर के अंदर घूम रही बुलेट का ऑपरेशन

लखनऊ में 4.5 घंटे चली सर्जरी, घर में लगी थी गोली, पुलिस अब भी खाली हाथ

तमसा संकेत, एजेंसी

लखनऊ। लखनऊ में 3 साल की बच्ची के सिर के अंदर बुलेट धंस गई जिससे बच्ची बेहोश हो गई। घरवाले जब उसे KGMU लेकर पहुंचे तो डॉक्टरों ने सीटी स्कैन कर देखा कि गोली तो सिर के अंदर मूव कर रही है। 5 डॉक्टरों की टीम ने बुलेट को 4.5 घंटे की जटिल सर्जरी के बाद सिर से निकाल दिया। बच्ची इंदिरान-गर इलाके की है। वह करीब 40 दिन पहले छत पर अपने भाई-बहनों के साथ खेल रही थी। उसी दौरान कहीं से गोली चली और टिनशेड तोड़ते हुए बुलेट बच्ची के सिर में धंस गई। गोली चलने और टिनशेड की आवाज सुनते ही घरवाले छत की तरफ दौड़े देखा तो बच्ची छत पर गिरी पड़ी थी। उसे तुरंत अस्पताल लेकर पहुंचे और गोली चलने की सूचना पुलिस को दी। KGMU के डॉक्टरों ने सिर में धंसी गोली को निकाल दिया लेकिन पुलिस अब तक यह नहीं पता लगा पाई कि गोली किसने चलाई थी? यह जटिल ऑपरेशन था। बच्ची को बिना नुकसान पहुंचाए सिर के

अंदर घूम रही गोली को बाहर निकालना चैलेंज था। डॉक्टरों ने 9 निडिल का घेरा बनाकर बुलेट को स्थिर कर दिया। उसके बाद गोली बाहर निकाली। यह पूरी प्रक्रिया 4.5 घंटे तक चली। बच्ची करीब 40 दिन से KGMU में ही भर्ती है। उसे अगले 2-3 दिन में छुट्टी मिल जाएगी। बच्ची को घरवाले पहले डॉ. राम मनोहर लोहिया अस्पताल ले गए थे। वहां से उसे KGMU ट्रॉमा सेंटर रेफर किया गया। जब बच्ची को KGMU ले जाया गया तब तक उसकी कंडीशन बिगड़ती जा रही थी। काफी खून बहने के साथ ही वह बेहोशी की हालत में पहुंच गई थी। सर्जरी के करीब 40 दिन बाद अब बच्ची की कंडीशन में बहुत हद तक सुधार है। पिता रमेश ने बताया- 17 दिसंबर की रात में बेटी की तबीयत फिर बिगड़ने पर हम उसे डॉ. राम मनोहर लोहिया अस्पताल ले गए। जांच के दौरान डॉक्टरों ने बताया कि उसके सिर में गोली फंसी है। अस्पताल में बेड नहीं होने की वजह से उसे ट्रॉमा सेंटर रेफर कर दिया गया। उसके बाद उसे KGMU ट्रॉमा सेंटर में भर्ती कराया। सूचना मिलने पर पुलिस ने मौके पर पहुंचकर जांच की थी। पुलिस जब छत पर गई थी तो उसने देखा कि टिन पर गोली का निशान है। पुलिस ने इसके बाद आसपास के घरों में भी पूछताछ की। पुलिस की जांच में सामने आया है।

महज 40 हजार रुपए में हुआ उपचार

डॉ. अंकुर बजाज ने बताया कि बच्ची के माता-पिता कमजोर आर्थिक बैकग्राउंड के हैं। उनके इलाज के लिए NGO से भी मदद ली गई। जटिल सर्जरी के बाद लगभग एक सप्ताह के लिए उसे ICU में रखा गया। अब भी बच्ची हॉस्पिटल में है। राहत की बात ये है कि इलाज में पूरा खर्च महज 40 हजार रुपए से कम लगा।

एक्सपर्ट डॉक्टरों की टीम बनाई गई

इसके लिए एक्सपर्ट डॉक्टरों की टीम बनाई गई। टीम में न्यूरो सर्जरी विभाग के प्रमुख डॉ. बीके ओझा के अलावा कुल 5 डॉक्टर रहे। बाल रोग विशेषज्ञ और एनेस्थीसिया के टॉप एक्सपर्ट डॉक्टरों को भी इसमें शामिल किया गया। साढ़े चार घंटे की जटिल सर्जरी के बाद उसका ऑपरेशन सफल रहा।

सिद्धार्थनगर महोत्सव-2026 : उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने तीसरे दिन का किया शुभारंभ

पिपरहवा स्तूप पर पूजा-अर्चना और मॉ सरस्वती व गौतम बुद्ध की प्रतिमा पर माल्यार्पण

तमसा संकेत, संवाददाता

लखनऊ। सिद्धार्थनगर महोत्सव-2026 के तीसरे दिन का शुभारंभ मा० उपमुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश श्री केशव प्रसाद मौर्य ने किया। इस अवसर पर उन्होंने मा० सांसद डुमरियागंज श्री जगदम्बिका पाल, मा० विधायक कपिलवस्तु श्री श्यामधनी राही, क्षेत्रीय अध्यक्ष गोरखपुर श्री सहजानन्द राय, जिलाध्यक्ष भाजपा श्री कन्हैया पासवान, जिलाधिकारी श्री शिवशरणप्पा जी.एन. और पुलिस अधीक्षक डा० अभिषेक महाजन के साथ द्वीप प्रज्ज्वलित किया और मॉ सरस्वती तथा गौतम बुद्ध की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया।जिलाधिकारी श्री शिवशरणप्पा जी.एन. ने मा० उपमुख्यमंत्री का बुके देकर स्वागत किया। बेसिक शिक्षा विभाग के शिक्षकों और शिक्षिकाओं ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की, वहीं शिवपति इंटर कॉलेज, शोहरतगढ़ की छात्राओं ने लोकगीतों की प्रस्तुति दी।इस दौरान मा० उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा

कि पिपरहवा स्तूप का दर्शन कर और सिद्धार्थनगर महोत्सव-2026 में भाग लेकर उन्हें अपार आनंद हुआ। उन्होंने कहा कि यह क्षेत्र सबसे बड़ा बौद्ध तीर्थ स्थल है और पूरी दुनिया में गौतम बुद्ध की पूजा होती है। उन्होंने कहा कि गौतम बुद्ध ने शांति और अहिंसा का संदेश दिया, जो आज भी उतना ही प्रासंगिक है।मा० उपमु-ख्यमंत्री ने बताया कि काला नमक चावल गौतम बुद्ध ने प्रसाद के रूप में दिया था, जिसकी पैकेजिंग कर इसे पूरे विश्व में भेजा जा रहा है। उन्होंने कहा कि डबल इंजन सरकार सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास के साथ काम कर रही है। उनका दावा है कि 2047 तक भारत एक विकसित राष्ट्र बनेगा, महिलाओं का सशक्तिकरण होगा, युवाओं को रोजगार मिलेगा और सिद्धार्थनगर को अग्रणी जनपद बनाने से कोई रोक नहीं पाएगा।केशव प्रसाद मौर्य ने यह भी कहा कि पिपरहवा में निकाले गए भगवान बुद्ध के अवशेष को रूस भेजा गया था और वह प्रयास करेंगे कि इसका अंश पिपरहवा में रखा जाए। साथ ही, बुद्ध से जुड़े स्थानों को सड़क, रोड और हवाई मार्ग से जोड़ने का काम किया जा रहा है, जिससे पर्यटक आकर्षित हों।इस अवसर पर मा० सांसद डुमरियागंज श्री जगदम्बिका पाल, मा० विधायक कपिलवस्तु श्री श्यामधनी राही, क्षेत्रीय अध्यक्ष गोरखपुर श्री सहजानन्द राय और जिलाध्यक्ष भाजपा श्री कन्हैया पासवान ने उपमुख्यमंत्री का स्वागत किया। उन्होंने स्थानीय प्रतिभाओं को बड़े मंच पर प्रस्तुति देने के लिए सराहना की।जिलाधिकारी श्री शिवशरणप्पा जी.एन. ने मा० उपमुख्यमंत्री को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया।

बॉयफ्रेंड के घर के बाहर धरने पर बैठी गर्लफ्रेंड

झांसी में बोली- डेढ़ साल से लिव-इन में थे

तमसा संकेत, एजेंसी

झांसी। झांसी में दो मासूम बच्चियों के साथ महिला अपने प्रेमी के घर के बाहर धरने पर बैठ गई है। उसने आरोप लगाया कि डेढ़ साल से बॉयफ्रेंड के साथ लिव इन रिलेशनशिप में रह रही है। हमारी 8 महीने की एक बेटी भी है। अब बॉयफ्रेंड चोरी छिपे किसी और से शादी कर रहा है। वह ऐसा नहीं होने देगी। उसी के साथ रहेगी। उसने बताया कि मैं अपने पति को छोड़ चुकी हूं। फिर मैं अपने बॉयफ्रेंड के साथ किराए के कमरे में रहने लगी। हमारी एक बेटी भी है। अब वो मुझसे दूर रहने लगा है। 26 जनवरी को कमरा खाली कराया और बीच रोड पर छोड़कर भाग गया। घर आई तो यहां ताला लगा था। शिकायत लेकर थाने गई। तब भी बॉयफ्रेंड का कुछ पता नहीं चल सका। तब से ही उसके घर के बाहर डेरा डाले हुए हूं। उसे किसी और से शादी नहीं करने दूंगी। पूरा मामला

मऊरानीपुर कस्बे का है। 22 साल की युवती महोबा के बेलाताल की रहने वाली है। उसने बताया- 2021 में मेरी शादी मऊरानीपुर में हुई थी। पहली शादी से 3 साल की एक बेटी है। दहेज और मारपीट की वजह से अनबन रहती थी। दो साल बाद ही मैं पति को छोड़कर अपने मायके में रहने लगी। पति पर केस कर दिया। उसने बताया कि मेरे ससुराल में पड़ोस में शैलेंद्र रहता है। उसका घर पर आना-जाना था। दो साल पहले हम दोनों की दोस्ती हो गई। जो प्यार में बदल गई।

त्यागी भूमिहार संयुक्त महासभा का प्रदर्शन

मेरठ। त्यागी भूमिहार संयुक्त महासभा ने यूजीसी कानूनों के विरोध में प्रदर्शन किया। संगठन ने इन कानूनों को सवर्ण विरोधी बताते हुए इन्हें तत्काल समाप्त करने की मांग की। महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रदीप त्यागी ने कहा कि कोई भी कानून जाति या धर्म को देखकर नहीं बनाया जाना चाहिए, क्योंकि यह नैसर्गिक न्याय के विरुद्ध है। उन्होंने जोर दिया कि कानून अपराधी के खिलाफ बनना चाहिए, न कि किसी विशेष जाति या धर्म के व्यक्ति के खिलाफ। त्यागी ने तर्क दिया कि अपराधी के अपराध को देखकर उसकी सजा तय होनी चाहिए, न कि उसकी जाति या धर्म के आधार पर। जागृति विहार त्यागी समिति के महासचिव बेगराज त्यागी ने बताया कि सुप्रीम कोर्ट ने फिलहाल इस कानून पर रोक लगाई है। उन्होंने मांग की कि यूजीसी स्वयं इस कानून को समाप्त करे। त्यागी भूमिहार संयुक्त महासभा के मंडलीय मंत्री महेंद्र त्यागी ने सरकार पर जातिवाद को बढ़ावा देने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि कानून अपराध को देखकर सजा देता है, न कि जाति देखकर। प्रदर्शन के बाद, त्यागी भूमिहार संयुक्त महासभा के प्रतिनिधिमंडल ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को संबोधित एक ज्ञापन एडीएम सिटी बृजेश सिंह को सौंपा।

सूचना : सुबह कोहरा छाया, ठंडी हवा ने बढ़ाई गलन, राजधानी समेत 20 ट्रेनें लेट

कानपुर में 3 दिन बारिश का अलर्ट

तमसा संकेत, एजेंसी

कानपुर। कानपुर में एक बार फिर मौसम बदला है। शुक्रवार सुबह भी कहीं घना तो कहीं हल्का कोहरा रहा। ठंडी हवा चलने के कारण गलन रही। 31 जनवरी से 3 दिन बारिश का अलर्ट है। मौसम विभाग ने वेस्टर्न डिस्टरबेंस (डब्ल्यूडी) के निकलने के बाद हाई क्लाउड और कोहरा बन रहा है। इसके कारण धूप नरम है और बीच-बीच में बादल छा रहे हैं। यह स्थितियां आने वाले 24 घंटों तक रहेगा। वहीं 24 घंटों में न्यूनतम तापमान में 2.6 डिग्री सेल्सियस की गिरावट दर्ज की गई। न्यूनतम तापमान 11 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया, जो सामान्य से 3.5 डिग्री अधिक है। अधिकतम तापमान में भी बीते 24 घंटों में 3.9 डिग्री की गिरावट दर्ज की गई। अधिकतम तापमान 17.2 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 4.3 डिग्री कम है। मौसम

विशेषज्ञ डॉ. एसएन सुनील पांडेय ने बताया कि दोपहर के समय तेज हवाएं चल सकती हैं। दिन में धूप निकलने के बाद भी सिहरन महसूस हो सकती है। शाम से लेकर सुबह तक गलन वाला मौसम बनेगा। आने वाले 24 घंटे इसी तरह का मौसम रहने के आसार हैं। गुरुवार को कोहरे के कारण सड़कों पर दृश्यता काफी कम रही, जिससे वाहन चालकों को धीमी रफ्तार से सफर करना पड़ा। खासकर हाईवे और शहर के बाहरी इलाकों में कोहरे का असर ज्यादा देखने को मिला।

ट्रेनों की रफ्तार पर लगा ब्रेक

कोहरे ने एक बार फिर ट्रेनों की रफ्तार पर ब्रेक लगाया है। गुरुवार को 20 ट्रेनें तय समय से घंटों देरी से कानपुर सेंट्रल रेलवे स्टेशन पहुंची। नई दिल्ली से चलकर सियालदह जाने वाली राजधानी एक्सप्रेस (12341) 01.21 घंटे, नई दिल्ली से चलकर हावड़ा जाने वाली राजधानी एक्सप्रेस (12302) 51 मिनट लेट रही। नई दिल्ली से लखनऊ जाने वाली तेजस एक्सप्रेस (82502) 47 मिनट व नई दिल्ली से बनारस जाने वाली दुरंतो एक्सप्रेस (02570) 04041 घंटे देरी से आई।

बारिश, तेज हवा और ओले गिरने से फसलों को भारी नुकसान

कृषि विशेषज्ञों सिद्धार्थ सिंह ने बताया- तेज हवा के साथ अगर गेहूं की फसल गिर रही है तो दाने हल्के हो जाएंगे। इससे उत्पादन में 20% तक की कमी आ सकती है। गन्ने की फसल भी काफी हद तक गिर गई है, जिससे गन्ने के खराब होने और उत्पादन घटने की आशंका बढ़ गई है। सरसों और सब्जियों की फसल को भी इस बारिश ने गंभीर नुकसान पहुंचाया है। खेतों में अधिक पानी भर जाने से सरसों की फलियां जमीन पर गिर गई हैं, जिससे दाना खराब होने का खतरा है। वहीं सब्जियों की फसलों में जलभराव के कारण गलन की समस्या बढ़ गई है। खासतौर पर सब्जी की खेती करने वाले किसानों को इस बारिश से सबसे ज्यादा नुकसान हुआ है।

पृष्ठ 01 का शेष...

राजस्थान- साध्वी ...

जब साध्वी ने पैसे देने से इनकार किया, तो उन्होंने 13 जुलाई 2025 को वीडियो को एडिट करके सोशल मीडिया पर पोस्ट कर दिया।

मंत्री स्वतंत्र देव ...

कहने लगे कि जिले के 90 प्रतिशत गांवों के लोग मुझसे पूछते हैं। मैं क्या जवाब दूं? इस पर विधायक के समर्थकों और सीओ सदर और कोतवाल से झड़प हो गई। इस मुद्दे पर सपा प्रमुख ने तंज कसा है। उन्होंने कहा- भाजपा के ही विधायक द्वारा, अपनी ही भाजपा सरकार के मंत्री को बंधक बनाना दर्शाता है कि भाजपा सरकार के विधायक अब अगले चुनाव में हारने वाले हैं। मंत्री ने विधायक को अपनी गाड़ी में बिठाया। विधायक हाथ पर हाथ पटकते हुए मंत्री से यही कहते रहे कि जितने भी प्रधान आए हैं, उन सभी के गांवों में समस्या है। हर घर नल योजना में जमकर लापरवाही हुई है। आप लोग कुछ भी नहीं देखते। ग्राउंड की समस्या बहुत बड़ी है। मंत्री स्वतंत्र देव सिंह की सुरक्षा में तैनात पुलिस अफसरों से भाजपा विधायक के समर्थकों की झड़प हुई। SDM और CO लोगों को समझाते रहे, लेकिन वे मंत्री का काफिला आगे बढ़ने नहीं दे रहे थे। तब स्वतंत्र देव सिंह ने मोर्चा संभाला। पुलिसवालों को समझाया। अफसर और समर्थक उलझते दिखाई दिए। उनकी जिद सिर्फ एक थी पूरी समस्या मंत्री के सामने रखेंगे। विवाद बढ़ता देख मंत्री स्वतंत्र देव सिंह विधायक को लेकर खुद डीएम कार्यालय पहुंचे। डीएम गजल भारद्वाज के साथ मंत्री ने विधायक और प्रधानों की बैठक कराई। डीएम ने 20 दिन में सारी खुदी हुई सड़कों को ठीक कराने का आश्वासन दिया। जिसके बाद प्रधान और विधायक माने। बैठक के बाद विधायक ने कहा- मंत्री ने अफसरों को 20 दिन में समस्याएं दूर करने का समय दिया है। अब 20 दिन में देख लेंगे कि अफसर मंत्री की बातों को कितना मानते हैं। आने वाले दिनों में जिसे रोकने की जरूरत पड़ी, उसे रोकेंगे। मुझे चाहे जो लड़ाई लड़नी पड़े, मैं पीछे नहीं हटूंगा। सपा प्रमुख ने कहा- वैसे ये न सोचा जाए कि ये इन दोनों के बीच की ही लड़ाई है, दरअसल ये तो केवल सैम्पल या कहें नमूना है, हर विधानसभा क्षेत्र में यही हाल है। इस बार भाजपा को चुनाव लड़ने के लिए प्रत्याशी ही नहीं मिलेंगे।

असम में 64...

डिब्रूगढ़ और धेमाजी को जोड़ने वाली ब्रह्मपुत्र नदी पर बोगीबील पुल के बारे में बात करते हुए, शाह ने कहा कि यह पूरी दुनिया के सामने भारत की प्रगति का प्रतीक है। उन्होंने कहा, हालांकि, भारत में बहुत कम लोग जानते हैं कि बोगीबील पुल मिसिंग समुदाय के मेरे भाइयों और बहनों की कड़ी मेहनत और पसीने से बनाया गया था। आज, यह पुल देश भर में और विश्व स्तर पर एक नए भारत की सोच का एक शक्तिशाली प्रतिनिधित्व बन गया है। केंद्रीय गृह मंत्री ने आगे कहा कि असम से राज्यसभा सांसद मनमोहन सिंह 10 साल तक प्रधानमंत्री रहे, लेकिन यह पुल अधूरा ही रहा। असम के लोगों ने मोदी जी पर भरोसा किया और उनके नेतृत्व में यह पुल सिर्फ चार साल में पूरा हो गया।

ओडिशा डीएसपी को ...

वहीं, DSP रश्मि रंजन दास ने कहा कि वायरल तस्वीर पीछे कुख्यात अपराधियों का हाथ हो सकता है। क्योंकि मैंने उनके खिलाफ एक्शन लिया है। महिला पुलिस अधिकारी ने कहा- मेरे बालों का रंग ऐश है। ऐसा करने पर कोई कानून या नियम रोक नहीं लगाता। हम अपनी जिम्मेदारी पूरी ईमानदारी से निभाते हैं। हेयरस्टाइल को लेकर टिप्पणी करना गलत है। रिटायर IPS अधिकारी ने कहा- पुलिस मैनुअल में हेयर-स्टाइल को लेकर स्पष्ट नियम नहीं हैं, लेकिन कर्मियों से सुरक्षा बल की गरिमा बनाए रखने की अपेक्षा जरूर की जाती है। एक गैर-मुद्दे को लेकर विवाद खड़ा करना किसी काम का नहीं है। सीनियर पुलिस अफसर ने कहा- ओडिशा समेत देशभर में कई महिला पुलिसकर्मी भी कॉफी, चॉकलेट, ऐश, ऑबर्न, कैरमेल और गोल्डन जैसे रंगों में बाल रंगवाती हैं। हर किसी के बाल काले ही रहें, ऐसा कोई आदेश नहीं दिया जा सकता। कुछ लोगों के बाल प्राकृतिक रूप से भूरे होते हैं और सफेद होना भी एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। रिटायर IPS अधिकारी ने कहा- पुलिस मैनुअल में हेयर-स्टाइल को लेकर स्पष्ट नियम नहीं हैं, लेकिन कर्मियों से सुरक्षा बल की गरिमा बनाए रखने की अपेक्षा जरूर की जाती है। एक गैर-मुद्दे को लेकर विवाद खड़ा करना किसी काम का नहीं है।

एबीवीपी कार्यालय में मिला मांस का टुकड़ा

आगरा। आगरा में ABVP कार्यालय के बाहर किसी ने मांस का टुकड़ा फेंक दिया। इससे कार्यकर्ता भड़क गए और हंगामा करते हुए रोड को जाम कर दिया। सड़क पर बैठकर कार्यकर्ताओं ने 108 बार 'जय श्रीराम' का जाप किया और हनुमान चालीसा का पाठ किया। इसी दौरान घटना की जानकारी मिलते ही बजरंग दल के कार्यकर्ता भी मौके पर पहुंच गए, जिससे स्थिति और तनावपूर्ण हो गई। इस वजह से करीब 1 किमी तक लंबा जाम लग गया। हंगामे की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने कार्यकर्ताओं को समझाने की कोशिश की। करीब 1 घंटे की बातचीत के बाद मामला शांत कराया। इसके बाद सड़क को खाली कराकर यातायात बहाल किया गया। घटना शुक्रवार शाम की है। राजामंडी इलाके में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) का कार्यालय है। यहां आरएसएस की बैठकें भी आयोजित होती हैं। इसी कार्यालय से सटा हुआ भगवान शिव का एक मंदिर भी है। शाम करीब 6 बजे किसी असामाजिक तत्व ने कार्यालय के गेट के पास मांस का एक टुकड़ा फेंक दिया।

उड़ीसा में उत्तर प्रदेश के आलू के विपणन को बढ़ावा

भुवनेश्वर में एकदिवसीय आलू प्रदर्शनी एवं बायर-सेलर मीट आयोजित

तमसा संकेत, संवाददाता

लखनऊ। उड़ीसा राज्य में उत्तर प्रदेश के आलू के विपणन को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से उद्यान विभाग, उत्तर प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश राज्य औद्यानिक सहकारी विपणन संघ (हाफेड) के संयुक्त तत्वावधान में भुवनेश्वर स्थित होटल द प्रेसीडेंसी में एकदिवसीय आलू प्रदर्शनी एवं बायर–सेलर मीट का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में प्रदेश के उद्यान, कृषि विपणन, कृषि विदेश व्यापार एवं कृषि निर्यात राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) दिनेश प्रताप सिंह तथा उड़ीसा सरकार के उप मुख्यमंत्री कनक वर्धन सिंह देव उपस्थित रहे। कार्यक्रम में उड़ीसा राज्य से कलुंगे गोरख वामन, धारित्री मिश्रा (एसएजी), जनरल मैनेजर (ओएसएएम बोर्ड) तथा उत्तर प्रदेश से डॉ. सर्वेश कुमार (प्रबंध निदेशक, हाफेड), डॉ. राजीव कुमार वर्मा (संयुक्त निदेशक, शाकभाजी), एस.के. सुमन (नोडल अधिकारी, हाफेड) सहित

विभागीय अधिकारी मौजूद रहे। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश के 11 आलू उत्पादक किसान तथा उड़ीसा राज्य के 47 आलू व्यापारियों, निर्यातकों एवं प्रसंस्करण इकाइयों के प्रतिनिधियों ने सहभागिता की।मंत्री दिनेश प्रताप सिंह ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश देश का प्रमुख आलू उत्पादक राज्य है, जहां देश के कुल आलू उत्पादन का लगभग 35 प्रतिशत उत्पादन होता है। उन्होंने बताया कि प्रदेश में वर्ष 2025–26 में लगभग 6.98 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में 245.94 लाख मीट्रिक टन आलू उत्पादन संभावित है।

तमसा संकेत
tamsa.newslko@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक विद्या देवी द्वारा कृष्णा डाइनेस्टी प्रिंटिंग प्रेस म0 न0 195 सेक्टर 6–बी, वृन्दावन योजना, रायबरेली रोड लखनऊ–226 029 (उ0प्र0) से मुद्रित व प्रकाशित।

सम्पादक : विद्यादेवी

समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा

समाचार पत्र में प्रकाशित लेख, राजनीतिक विश्लेषण, लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है।
मो0- 9415799533
R.N.I. NO. UPHIN/2021/83676